सेवा सम्मान विशेषांक 2022

रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-01, कुल पृष्ठ-68, आश्विन-कार्तिक, विक्रम सम्वत् 2079, अक्टूबर, 2022

CSR Initiative by
"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

APML Nidra Daan Kendra

A small step... Towards a big leap

APML

ड्राईवर के आगमन पर पांव धोकर स्वागत

फ्री नाई सेवा

ड्राईवर के आराम करने की सुविधा

हर व्यक्ति को 06 घण्टे सोना बहुत ही आवश्यक है । मगर एक ट्रक ड्राईवर 2:00 से 2:40 घण्टे ही सो पाता है वह भी किश्तों में क्योंकि उसे डर होता है कि गाड़ी से तेल और सामान की चोरी न हो जाये। और इस तरह नींद पूरी न होने से अक्सर उनसे सड़क दूर्घटना हो जाती है।

ए.पी.एम.एल ने ड्राईवर निंद्रा केन्द्र बनाया जिसमे एक ट्रक ड्राईवर कम से कम 6:00 घण्टे सुकून से सो सके और उसके सोने पर उसका ट्रक, सामान एवं तेल सुरक्षित है उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ए.पी.एम.एल ड्राईवर निंद्रा केन्द्र के कम्पाउन्ड में तैनात सुरक्षाकर्मी लेंगे। और ड्राईवर को यह आशवासन देंगें की आपके माल के साथ कुछ होता है तो उसकी भरपाई हम करेंगें।

ड्राईवर निंद्रा दान केंद्र दूदू – NH 8, जयपुर, राजस्थान मे स्थित है इस एक शुरूआत के कारण प्रतिदिन 400 नींद दिलाई जाती है जिसके कारण दुर्घटनाओं मे काफी कमी आई है। केंद्र मे दी जा रही सभी सुविधायें पूर्णत: निशुल्क है।

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com®

ABHINAV AGARWAL

Aditya Power Systems

1980 1st floor, Katra Lacchu Singh,
Bhagirath Place, Chandni Chowk,
Delhi-110006, INDIA
Tel: 011-23876712, 23876711
Mobile: 9968065030, 7683008901
Email: aditya.powersys@gmail.com

Aditya Power Control

2264-65, Kauria Pull,
H.C.Sen Marg, Chandni Chowk,
Delhi-110006
Mobile: 9958047259

AVK Technologies

Shop No. 3-4, Lower Ground Floor,
Sitaram Complex, Near Metro Pillar No.
50-51, Sikenderpur, Gurugram (HR)
Tel: 012-44225885
Mobile: 9871838485, 8851424848

AVK Energy Solutions

B-101, Tarun Apartments,
Subhash Chowk, Sector-47,
Gurugram-122018 (HR)
Mobile: 9773728545

Advitya
HOMES

SECTOR-143, MATHURA ROAD FARIDABAD

+91-95551 12233 | www.advitya.co.in

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA
INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि **"सेवा भारती"** संस्था द्वारा 7 अक्टूबर, 2022 को नई दिल्ली में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसमें समाज सेवा से जुड़ी महान विभूतियों को सम्मानित किया जाएगा।

समाज के वंचित, अभावग्रस्त और साधनविहीन वर्गों का सम्पूर्ण उत्थान तभी संभव है जब सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के साथ ही गैर सरकारी संगठन, सिविल सोसायटी और अन्य सभी हितधारक इस कार्य में अपना योगदान दें। यह अति हर्ष का विषय है कि सेवा भारती संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक संस्कार के चार आयामों के साथ जरूरतमन्द लोगों के उत्थान का पुण्य कार्य कर रही है। सेवा सम्मान कार्यक्रम के माध्यम से मानवता की सेवा में संलग्न व्यक्तियों को सम्मानित करने की पहल से न केवल उनका उत्साहवर्धन होगा बल्कि अन्य लोगों को भी लोकोपकारी कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(ओम बिरला)

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

दिनांक:- 20-09-2022
पत्र क्रमांक - 692/22

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि सेवा भारती ,नई दिल्ली अमूल्य सेवाकार्यों में सहयोग देने वाली 25 विभूतियों का सम्मान कार्यक्रम कर रही है। उप-राष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड़ जी के कर कमलों से सेवाकार्यों में सक्रिय विभूतियों का सम्मान होना इन विभूतियों के लिए स्मरणीय और अन्य लोगों के लिए निश्चित ही प्रेरणादायी रहेगा।

सेवा भारती अपने ध्येय वाक्य नर सेवा,नारायण सेवा पर चलते हुए वंचित, साधन विहीन, अभावग्रस्त और जरूरतमंद व्यक्तियों के बीच सेवा कार्य कर महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। सेवा भारती ने 2500 कार्यकर्ताओं के सहयोग से सैकड़ों प्रकल्पों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक संस्कार के क्षेत्र में लाखों जरूरतमंदों को लाभान्वित किया है।

आशा है, सेवा-सम्मान समारोह के आयोजन से सम्मानित हो रहे व्यक्तियों और सेवाकार्य से जुड़े अन्य लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

(शिवराज सिंह चौहान)

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

संख्या- 2 6 SEP 2022
G-463/ CM-2/ 2022

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि सेवा भारती द्वारा दिनांक 07 अक्टूबर, 2022 को नई दिल्ली में 'सेवा सम्मान' कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

समाज के उत्थान एवं आमजन को जागरूक करने में सामाजिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सेवा भारती द्वारा समाज के उपेक्षित, वंचित एवं निर्बल वर्गों के उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। मुझे आशा है कि यह संस्था भविष्य में भी इसी प्रकार समाज सेवा हेतु सक्रिय रहेगी।

आयोजन की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

भूपेन्द्र पटेल
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

दि. १३-०९-२०२२

संदेश

अभावग्रस्त लोगों के जीवन को आधार बनकर सेवा कार्य में संलग्न रहते हुए सेवा भारती अपनी सामाजिक प्रवृत्तियों में अनेक कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित कर रही है। जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन जैसे अनेक प्रकल्पों के जरिये, जरूरतमंद परिवार तक लाभ पहुँच रहा है।

सेवा विभूतियों का सम्मान, संस्था का सामाजिक संस्कार के रूप में निभाया जाना बडा प्रशस्य कार्य है। सेवा भारती (दिल्ही) द्वारा दिनांक ०७ अक्टूबर २०२२ को सेवा सम्मान कार्यक्रम के आयोजन, और इस अवसर में महामहिम उपराष्ट्रपतिजी आदरणीय श्री जगदीप धनखड जी की उपस्थिति बहुत अभिनंदनीय आयोजन है। मेरी शुभकामना। आयोजन अंतर्गत सम्मानीत हो रहे सभी कार्यकर्ताओं का अभिनंदन करता हूँ।

आपका,

(भूपेन्द्र पटेल)

To,
Shree Ramesh Agrawal, President,
Sewa Bharti, (Delhi),
Sewa Kunj, 13, Bhai Veer Singh Marg,
Gole Market, New Delhi-110001.
Email:info@sewabhartidelhi.org

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
नई दिल्ली-110002
ऑफिस-23392020, 23392030
फैक्स - 23392111

अ.शा. पत्र संख्या : osdcmi/70
दिनांक 27-09-2022

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि **सेवा भारती संस्था** वंचितो, साधन विहीन, अभावग्रस्त और जरूरतमंद लोगों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक संस्कार के लिए कार्य कर रही है, जो सराहनीय है।

यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि संस्था 07 अक्टूबर, 2022 को डॉ अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में एक कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। आशा है कार्यक्रम के माध्यम से संस्था अपने कार्यकलापों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में सफल होगी।

मैं कार्यक्रम की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

(अरविन्द केजरीवाल)

Sh. Ratan Tata

Chairman Emeritus,
Tata Sons and Tata Group

Dear Mr. Agarwal,

President, Sewa Bharti

I am withdrawing from external commitments, regret it would not be possible for me to accept your kind invitation. Trust you will understand.

Please accept my best wishes for the success of this event.

These encouraging wishes come through email sent to Sh. Ramesh Agarwal, President, Sewa Bharti (Delhi) by Dilnaz J. Gilder, Senior Manager, office of Mr Ratan N. Tata on 5th September, 2022 at 05:34PM. Sewa Bharti requested Mr Tata to be Chairperson (अध्यक्ष) of Sewa Samman-2022.

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-01, कुल पृष्ठ-68, अक्टूबर, 2022

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
अध्यक्षीय कलम		12
सम्पादकीय		13
दान की परम्परा एवं घुमंतू समुदाय	दुर्गादास	15
आज देश को भामाशाहों की आवश्यकता है	शुकदेव	19
दान-धर्म से बड़ा कोई पुण्य और धर्म नहीं	जगराम भाई	21
क्या है सेवा	विनोद कुमार बनावरा	26
सेवाभावी और सदाचारी बनिए	वीरेन्द्र कुमार शर्मा	29
सिख मान्यताओं में सेवा और दान का महत्व	पन्नालाल	30
सेवा से ही झंकृत होगा वन्देमातरम्	डॉ. सर्वेश कुमार मिश्र	32
दान की महिमा	डॉ. शिवाली	34
सेवा कब सम्मान बन जाता है	आचार्य आशुकवि पंकज	37
गुरु जी का आशीर्वाद	लक्ष्मण	38
सेवा भारती की यशस्वी यात्रा	अंजू पांडेय	39
समाज में फैल रही है सेवाधाम की सुगंध	राजेन्द्र नेगी एवं शैलेंद्र विक्रम	43
टाटा समूह के सेवा कार्य	डॉ. शिवम् शर्मा	47
सिद्धि-सेवा की पर्याय	प्रतिनिधि	51
कुछ सेवाभावी उद्योगपति		53
समाज के कुछ दानवीर	प्रतिनिधि	56
बड़े लोगों की बड़ी सेवा	दीप्ति अग्रवाल	58
क्या है सीएसआर कानून!	भूपेन्द्र	59
भारत में सीएसआर और सामाजिक उत्तरदायित्व	डॉ. दीप नारायण पाण्डेय	61
समाज सेवा से जुड़ीं कुछ महिलाएं	ऋषिता अग्रवाल	62
ओएनजीसी के सेवा कार्य	प्रतिनिधि	63
देहदानी स्व. मांगेराम जी		64
श्री श्याम सुंदर अग्रवाल		64

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

अध्यक्षीय कलम

मेरे सभी प्यारे सहभागियो!

सेवा भारती की मासिक पत्रिका 'सेवा समर्पण' का 'सेवा सम्मान विशेषांक' आप सभी के सामने है। सेवा भारती एक स्वयंसेवी, सामाजिक (पंजीकृत) संस्था है, जो वर्ष 1979 से आज तक निरंतर वंचित, साधन-विहीन, अभावग्रस्त और जरूरतमंद जन-मानस की सेवा कर रही है। सेवा भारती अपने ध्येय वाक्य 'नर सेवा, नारायण सेवा' को आधार बनाकर अभावग्रस्त लोगों के सामाजिक उत्थान में दिन-रात लगी हुई है। आपको ज्ञात होगा कि हम समाज के प्रहरी बन कर जीवन के चार महत्वपूर्ण आयाम, जैसे-शिक्षा, स्वावलंबन, स्वास्थ्य, संस्कार पर डटकर सेवा कार्य करते रहते हैं। हम अपने विभिन्न प्रकल्पों, जैसे- सेवाधाम, महिला स्वावलंबन, गोपालधाम, स्ट्रीट चिल्ड्रेन, कम्प्यूटर शिक्षा, मातृछाया, अपराजिता, कुष्ठ निवारण आदि कार्यक्रम के रूप में विभिन्न दानवीरों के सहयोग से अनगिनत जरूरतमंद परिवारों तक सेवा पहुँचा रहे हैं।

मित्रो, पाठको, मेरे बंधुओ! यह बात सर्वविदित है कि 'कोई भी अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।' थोड़ा, कम, अधिक, अत्यधिक जो भी कार्य हम कर सकें, वह आपके दान-सहयोग-साथ से ही संभव हुआ।

भारतीय संस्कृति की कोख से अनेक महान दानवीरों ने जन्म लिया। जैसे महर्षि दधीचि, राजा बलि, दानवीर कर्ण, भामाशाह आदि जिन्होंने राष्ट्र सेवा के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया। 'दान' केवल एक शब्द नहीं है, एक भाव है, एक अनुभूति है, एक सोच है, एक प्रयास है, एक कल्पना है। दान की महिमा इतनी है जितना महर्षि दधीचि का प्राण ादान और राम सेतु पर श्रम दान करती गिलहरी का योगदान।

ऐसे देवतुल्य दानवीरों की इसी भावना को समाज और सेवा भारती नमन करती है। अपनी कृतज्ञता प्रकट करके हम दानवीरों के सहयोग को नाप-तोल नहीं रहे हैं, अपितु स्मरण कर रहे हैं कि उनके दिए गए सहयोग से हम क्या कुछ कर पाए। किसी एक के जीवन में भी अगर कोई सकारात्मक बदलाव आया तो इसका श्रेय जाता है उस सहयोग को, जो इन सेवावर्ती दानवीरों ने दिया।

इसी क्रम में सेवा भारती 7 अक्तूबर, 2022 को 'सेवा सम्मान समारोह-2022' आयोजित करने जा रही है। इसमें महामहिम उपराष्ट्रपति माननीय श्री जगदीप धनखड़ जी द्वारा 25 सेवा विभूतियों को उनके अमूल्य सेवा कार्यों में सहयोग के लिए 'सेवा रत्न' और 'सेवा विभूषण' से सम्मानित किया जाएगा।

इसी कड़ी में 'सेवा समर्पण' का यह विशेषांक प्रकाशित किया गया है, जो 'सेवा' 'दान' जैसे विषयों की बहुआयामी एवं व्यापक रूप से चर्चा करता है।

आज हमारे समाज में एक से एक दानी, कर्मवीर, कॉरपोरेट्स हैं, उद्योगपति हैं और बाकी अन्य लोग हैं, जो 'दान' की महिमा का गुणगान किए हुए हैं। कहते हैं, 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।' शब्दों में इतनी ताकत है कि सूर्य की रोशनी से भी तीव्र गति से अपना प्रकाश फैलाते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक आपको अवश्य अच्छा लगेगा और 'सेवा समर्पण' पत्रिका से जुड़कर भी आप हमको अनुगृहित करेंगे।

-रमेश अग्रवाल
अध्यक्ष, सेवा भारती (दिल्ली)

दान देने वाला ही विशिष्ट है

सेवा भारती परिवार से जुड़े सभी पाठक वर्ग के समक्ष सेवा समर्पण का विशेषांक 'सेवा-सम्मान 2022' प्रस्तुत है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है- ''दातशूरो विशिष्यते'' यानी दानवीर पुरुष ही अन्य सब पुरुषों से विशिष्ट है।

भारतीय संस्कृति परमार्थ और परोपकार को प्रचुर महत्व देती है। जब अपनी सात्विक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाए, तो लोक कल्याण के लिए दूसरों की सेवा के लिए दान देना चाहिए। प्राचीनकाल में ऐसे निस्वार्थी लोक-हित विरत ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, पुरोहित, योगी, संन्यासी होते थे, जो समस्त आयु लोक-हित के लिए समर्पित कर देते थे। उपदेश एवं प्रवचन द्वारा जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, सहयोग, सुख, सुविधा, विवेक, धर्मपरायणता आदि सद्गुणों को बढ़ाने का प्रयत्न करते थे। ये लोग जनता की उतनी सेवा करते थे, तो जनता भी अपना कर्तव्य समझ के उनके भोजन, निवास, वस्त्र, पालन-पोषण का प्रबंध करती थी। जैसे लोक हितकारी संस्थाएं आज दान से चलाई जाती हैं, उसी प्रकार ये ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, संत दान-पुण्य से निर्वाह करते थे।

इस तरह दान की परम्परा आगे बढ़ी। कालान्तर में उस व्यक्ति को भी दान दिया जाने लगा जो अपंग, आधा लाचार, जीविकोपार्जन न करने में समर्थ व्यक्ति हो। ऐसे दान को भिक्षा कहा जाने लगा। पुण्य, परोपकार, सत्कार्य, लोक कल्याण, सुख शांति की दृष्टि, सात्विकता का उन्नयन तथा समष्टि की, जनता की सेवा के लिए इन दोनों का उपयोग होना चाहिए।

भारतीय संस्कृति में दान की परम्परा और कुछ नहीं, एक वैज्ञानिक पद्धति है। जो कुछ हम दूसरों को देते हैं, वह हमारी रक्षित पूंजी की तरह जमा हो जाता है। कुपात्र को दान देना व्यर्थ है। जिसका पेट भरा हो, या नीयत बुरी हो उसको दान देकर पैसा और भावना दोनों को ही व्यर्थ करना है। भारतीय संस्कृति में दान देना बहुत ही उत्तम कार्य है। जो अपनी रोटी दूसरों के साथ बांट कर खाता है, उसको किसी बात की कमी नहीं होती। दान देने वालों को आत्मसंतोष, मानसिक तृप्ति एवं समृद्धि मिलती है। किन्तु यह दान अभिमान, दम्भ, कीर्ति के लिए नहीं, आत्मकल्याण के लिए होना चाहिए। मैं दान नहीं दूंगा तो यह संसार चलना बंद हो जाएगा, ऐसा सोचना भी मूर्खता है। दान देने से लेने वाले की अपेक्षा देने वाले का हृदय आनन्द से खुल जाता है।

दानशीलता का प्रकाश दानी को प्रकाश-पुंज बना देता है। दान रुपये-पैसे, रोटी-भोजन, कपड़े-मकान का ही नहीं, श्रम का भी हो सकता है। वह दधीचि की तरह अपनी हड्डियों का दान उपकार के लिए कर देता है। व्यास जी की तरह अपनी आयु सद्ग्रंथों की रचना में लगा देता है। द्रोणाचार्य की तरह शास्त्र विद्या का प्रचार करता है। पाणिनी की तरह व्याकरण बनाता है, बुद्ध की तरह प्रेम-धर्म का उपदेश देता है। इस प्रकार सच्चा दानी समय और देश की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी बुद्धि, योग्यता, कला, प्रतिभा शक्तियों का दान करता रहता है।

आधुनिक समय में जितनी प्रगति हमने की है उतनी ही लाचारी, भुखमरी, स्वास्थ्य हानि जैसी कुरीतियां भी विकसित हुई हैं। ऐसे में 'दान' का महत्व कम नहीं, हुआ अपितु बढ़ा है। भौगोलीकरण, उदारीकरण और बाजारीकरण के दौर में व्यक्ति की नहीं, अपितु 'धन' की महत्ता अधिक है। ऐसे में जब सब कुछ बाजार, पैसा और शोहरत तय कर रहा है, तो प्रश्न उठता है कि जिनके पास यह सब नहीं है तो वे लोग कहां जाएं? क्या मृत्यु का वरण कर लें? नहीं। हमारा समाज चाहे जितना भी स्वार्थी हो, अनेक हृदय आज भी दूसरों के लिए धड़कते हैं, और दानवीर सर्वत्र मिल जाएंगे, जो अपना सब कुछ लुटाकर स्नह कर सकें। भारतीय संस्कृति में दान की महिमा न कम थी, न ही होगी। यहां की मिट्टी ही ऐसी है कि हम दूसरों का कष्ट देख ही नहीं सकते हैं। हम धन व्यर्थ करें और दूसरे भूखे सोएं, ऐसा विचार भी मन में नहीं लाते हैं।

यही भाव, यही विचार और इसी भावना से ओत-प्रोत है यह विशेषांक। यह एक अनूठी पहल है, एक शुरुआत है दानवीरों को नमन करने की, उनके योगदान से सीखने की और आत्मसात करने की। मुझे आशा है कि आप हमारी इस यात्रा के साथी सदैव बने रहेंगे।

– डॉ. शिवाली अग्रवाल

TRV
SPORTS
Chairman :
Triloki Nath Goel
Edition
LIMITED
The Spirit of Game

दान की परम्परा एवं घुमंतू समुदाय

✍ दुर्गादास

दान की परम्परा कहते ही हमारी आँखों के सामने अनेक महापुरुषों के नाम आ जाते हैं, जैसे- महर्षि दधीचि, जिन्होंने समाज की रक्षा के लिए अपनी हड्डियों तक का दान कर दिया। दानवीर कर्ण, जिन्होंने मृत्यु को सम्मुख जानकर भी अपने जन्मजात कवच कुंडल दान कर दिए। भामाशाह, जिन्होंने सैन्य संचालन हेतु महाराणा प्रताप को अपना सारा धन समर्पित कर दिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि दान की पुण्य परम्परा हमारे समाज में पौराणिक काल से है। दान अर्थात् समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन, जो सामर्थ्य होने पर भी दान नहीं करता उसको समाज में अच्छा नहीं माना जाता। समाज के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख रहकर अर्थोपार्जन करने वाला व्यक्ति चाहे जितना भी जप तप यज्ञ आदि कर ले, उसे स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती। दान देते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि दान हमेशा सुपात्र को ही दिया जाए। अपने यहाँ दानदाताओं की कथाओं में राजा महाराजाओं से लेकर निर्धन से निर्धन परिवारों तक के प्रसंग मिल जाते हैं।

दान की इस यशस्वी परंपरा में अपने घुमंतू समुदाय भी कहीं पीछे नहीं हैं। कभी कला-कौशल के माध्यम से भारत का मान बढ़ाने वाला घुमंतू समाज, जिसने आजादी के आंदोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अंग्रेजों का कोपभाजन बन कर जंगलों, पहाड़ों में निर्वासित जीवन स्वीकार किया, वह घुमंतू समाज शहर में फुटपाथ के किनारे और गांव के बाहर उपेक्षित व अभावग्रस्त जीवन जीने के बावजूद कभी दान देने में पीछे नहीं रहा।

16वीं शताब्दी में लक्खीशाह बंजारा नामक प्रसिद्ध व्यापारी के द्वारा अनेक बावड़ियां, कुएं व धर्मशालाएं इत्यादि बनाने का उल्लेख मिलता है। 20वीं शताब्दी में सांसी समाज का वह शूरवीर योद्धा हुआ जिसे डाकू सुल्ताना के नाम से जाना जाता है। उसने अंग्रेजों व अंग्रेजों के चाटुकारों को चुनौती दे दे कर लूटा, वह स्वयं ही धन अथवा अनाज को लूटकर गरीबों में बंटवा दिया करता था। उसके बारे में कहा जाता है कि उसके

पास से कोई भी मांगने वाला कभी खाली हाथ नहीं गया।

अभावों में भी दायित्व-बोध

कोरोना की वैश्विक त्रासदी के समय भीलवाड़ा में पहले लॉकडाउन के दौरान जब स्वयंसेवक राशन लेकर गाड़िया लुहारों के बीच पहुंचे तब उन्होंने न केवल कोई भी सहायता लेने से मना कर दिया, बल्कि अपनी ओर से 51,000 रुपये एकत्रित करके स्वयंसेवकों को दिए और कहा कि आप इन पैसों का हमारी ओर से जरूरतमंद लोगों में राशन बंटवा दीजिए। अकबर के आक्रमण के समय महाराणा प्रताप के साथ अपनी पुण्यभूमि चित्तौड़ से निकले ये लोग आज भी देशभर में फुटपाथ के किनारे त्रिपाल के नीचे लोहे का काम करते दिखाई दे जाते हैं। ऐसा संघर्षपूर्ण व अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भी समाज के प्रति उनके इस दायित्व-बोध की सर्वत्र प्रशंसा की गई।

प्रधानमंत्री जी ने भी ट्वीट कर इनके इस सद्प्रयास की सराहना की।

दान की प्रति स्पर्धा

राजस्थान में एक अन्य घुमंतू समुदाय रहता है जिसे सांटिया के नाम से जाना जाता है। इनके अधिकांश परिवार अत्यंत विपन्न अवस्था में जीवन-यापन कर रहे हैं। कुछ सांटिया अब पढ़ाई व काम-धंधा भी करने लगे हैं। इन्हीं के कुछ परिवार नागौर जिले के जायल नामक स्थान पर रहते हैं। जायल के पास दुगोली के निवासी भंवरलाल सांटिया के पुत्र भोडूराम ने जायल चिकित्सालय में 5,00,000 रु. की लागत से प्याऊ का निर्माण करवाया। इससे प्रेरणा लेकर जायल निवासी मोतीराम सांटिया ने जायल में ही 15,00,000 रुपए की लागत से पंचायत समिति परिसर में एक प्याऊ, पार्किंग स्थल व धर्मशाला का निर्माण करवाया। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए जोगाराम सांटिया ने कोर्ट परिसर में सार्वजनिक प्याऊ का निर्माण करवाया। इस घटनाक्रम को प्रकाशित करते हुए समाचार पत्रों में छपा, "घुमक्कड़ जिंदगी जीने वाले खानाबदोश सांटिया परिवारों में इन दिनों भामाशाह बनने की होड़ मची हुई है।"

निर्धनता भी दान में बाधक नहीं

इसी क्रम में बाड़मेर जिले में जसोल के निवासी रावताराम गाड़िया लुहार का प्रेरक प्रसंग उल्लेखनीय है। अपने पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार के भरण- पोषण का दायित्व रावताराम पर आ गया। रावताराम ने कभी रद्दी बेची, कभी दिहाड़ी मजदूर का काम किया, कभी कबाड़ी का काम किया। स्वयंसेवक बनने के साथ ही रावताराम के मन में समाज के प्रति दायित्व बोध एवं सेवा का भाव उत्पन्न हुआ। एक बार अस्वस्थ होने पर वे चिकित्सालय में दिखाने गए। वहाँ उनके ध्यान में आया कि कमरे का पंखा खराब है और मरीजों को असहनीय गर्मी का कष्ट सहना पड़ता है। उनके मन में पंखे दान करने की इच्छा हुई। रावताराम ने माँ से इसके लिए अनुमति मांगी, तो माँ ने भी सहर्ष स्वीकृति दे दी। चिकित्सालय प्रशासन ने बताया कि अगले ही दिन रावताराम पाँच पंखे लेकर चिकित्सालय पहुँच गए। चिकित्सा अधिकारी की सूचना पर स्थानीय सरपंच तथा पंचायत समिति के प्रधान अस्पताल पहुँचे। उन्हें कल्पना थी कि किसी संपन्न व्यक्ति ने चिकित्सालय को पंखे दान में दिए होंगे, किंतु जब उन्होंने दानदाता के रूप में रद्दी बेचने वाले एक गाड़िया लोहार को देखा तो उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ।

उन्होंने रावताराम की पीठ थपथपाई और कहा देखने में यह दान भले ही छोटा लगे, लेकिन महत्व इस बात का है कि दान देने वाले की हैसियत क्या है और मन कितना बड़ा है।

नवदम्पति की ओर से प्रथम मंगल निधि

ऐसा ही एक प्रसंग महाराष्ट्र के भंडारा जिले की साकोली तहसील के अंतर्गत खैरलांजी गांव में घटित हुआ। यहाँ कोरोना त्रासदी के समय पहले लॉकडाउन के दौरान गोपाल समाज की दो बहनों का विवाह एक साथ संपन्न हुआ। इनमें से एक बहन घुमंतू कार्य की पालावर्च शाला में आचार्या के नाते सेवा देती थी। विवाह के समय आशीर्वाद समारोह के दौरान अपने कार्यकर्ता जब मंच पर शुभकामनाएं देने के लिए गए तब इस दम्पति ने स्वेच्छा से एक लिफाफा अपने कार्यकर्ताओं के हाथों में दिया और कहा कि यह हमारी ओर से अपने घुमंतू कार्य के लिए थोड़ी सी मंगल निधि है, कृपया स्वीकार कीजिए। कार्यकर्ताओं को आश्चर्य हुआ, क्योंकि इस अवसर पर तो सब लोग नवदम्पति को उपहार देते हैं। बाद में पता चला कि इन्हें जो राशि विवाह के दौरान मिली थी उसमें से लगभग 1000 समाज कार्य के लिए देने का उन्होंने संकल्प किया था। यह राशि भले ही थोड़ी लगे, लेकिन हमें समाज को कुछ देना है, यह भाव ही अपने आपमें अत्यंत प्रेरणादायक है।

बेघर ने दी जमीन

राजस्थान में जयपुर के समीप चोमूं नामक स्थान पर श्री गोमाराम गाड़िया लुहार रहते हैं। इनके पुत्र का नाम वकील है। पिता मजदूरी करते हैं और पुत्र मिस्त्री का काम करता है। चोमूं में इनके पास थोड़ी सी जमीन थी। परिवार की योजना थी कि कभी यहाँ मकान बनाकर रहेंगे। इस जमीन के पास में ही सरकारी स्कूल है। इस जमीन की स्थिति कुछ ऐसी थी कि यह स्कूल के लिए बहुत उपयोगी थी। स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने इस जमीन के विषय में श्री गोमाराम से सम्पर्क किया, उपखण्ड अधिकारी ने उनके पुत्र श्री वकील से बात की। परिवार में आपसी विचार-विमर्श के बाद 2 फरवरी, 2002 को श्री गोमाराम ने उपखण्ड अधिकारी के माध्यम से यह जमीन स्कूल के नाम कर दी। उल्लेखनीय है कि जब यह जमीन दान में दी गई तब इनके पास स्वयं रहने के लिए भी मकान नहीं था। समाचारपत्रों के माध्यम से जब यह बात गांव वालों की जानकारी में आई तब सबने गाड़िया लुहार परिवार के इस कार्य की हृदय से सराहना की।

श्रीराम मंदिर के लिए एक लाख रु.

राजस्थान के भरतपुर जिले की कुम्हेर तहसील में गाड़िया लुहार, नट, सांटिया आदि परिवार बड़ी संख्या में रहते हैं। संघ कार्यकर्ताओं का इनके साथ सतत आत्मीय संपर्क है। अयोध्या में जब भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण हेतु निधि संकलन का कार्य चल रहा था, तब संघ के कार्यकर्ताओं ने घुमंतू समाज के इन बंधुओं के सामने इस विषय को रखा। यहाँ नेमी नामक गाड़िया लुहार एक उत्साही व सक्रिय कार्यकर्ता हैं। उन्होंने संकल्प लिया कि मेरी बस्ती से भी राम मंदिर के लिए अच्छा धन संग्रह करवाऊंगा। नेमी ने मित्रों के साथ मिलकर अपनी गाड़िया लुहार बस्ती में घर-घर संपर्क किया। देखते ही देखते 65,000 रु. एकत्रित हो गए। रोज कमाने और रोज खाने वाले लोगों द्वारा दिया गया यह दान वैसे तो अपेक्षा से अधिक ही था, लेकिन नेमी का संकल्प इसे 1,00,000 रु. तक पहुंचाने का था। नेमी अपनी टोली के साथ पास की नट बस्ती में गए। ये नट लोग मेलों में झूला झुलाने का कार्य करते हैं। यहाँ भी आशा के अनुरूप दान मिला, किंतु अभी भी यह धनराशि 1,00,000 रु. से कुछ कम थी। अब नेमी व उसके मित्र पास की सांटिया बस्ती में गए। ये लोग पशुओं के व्यापार का काम करते हैं। इन लोगों ने बहुत उत्साह के साथ श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए यथाशक्ति दान दिया। पास में ही कहीं आठ दस सपेरे परिवार भी आकर रुके हुए थे। जब उन्हें इस धन संग्रह व उसके उद्देश्य की जानकारी मिली, तो उन्होंने भी बढ़-चढ़कर श्रीराम मंदिर निर्माण निधि संग्रह के कूपन लिए। अंत में इन सभी घुमंतू जातियों के सहयोग से एकत्रित 1,00,000 रु. श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए दे दिए गए। महत्व इस बात का नहीं है कि दान की यह रकम कितनी थी, बल्कि महत्व इस बात का है कि जिन्होंने यह दान दिया उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति कैसी थी। कठिन संघर्षपूर्ण स्थितियों एवं घोर प्रति कूलताओं में रहने वाले इन बंधुओं का यह दान अतुलनीय है, अकल्पनीय है, अनुकरणीय है।

पुरुषार्थपूर्वक अर्जित धन का एक भाग धर्मपूर्वक सामाजिक कार्य में भेंट करने से व्यष्टि और समष्टि सबका मंगल होता है। शास्त्रों में कहा गया है "तेन त्यक्तेन भुंजीथा" अर्थात् उपभोग के बाद शेष बचे भाग को प्रकृति को वापस कर देना चाहिए। हमारे घुमंतू समाज ने इस चिंतन को अपने जीवन में आत्मसात किया है। राष्ट्र धर्म की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पण इस समाज का इतिहास रहा है। अभाव में भी इन्होंने अपने स्वभाव को नहीं छोड़ा। समाज से जिन जातियों को इतना उपहास, उपेक्षा और तिरस्कार मिला हो, उन्होंने समाज के प्रति अपने दायित्व को जिस तरह निभाया है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ■

(लेखक घुमंतू समाज 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के राष्ट्रीय प्रमुख हैं)

KK Duplex & Paper Mills Pvt. ltd.
Director - Bharat Aggarwal
Website: www.kkduplex.com
Email: contact@kkduplex.com
: +91-9654133033, +91-9759003688
Address : 8.5 Km, Jansath Road, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh-251001
Business Activity : Manufacturers of duplex board

Dev Prayag Paper Mill Pvt. ltd.
Director - Bharat Aggarwal
Email : devprayagpaper@yahoo.in
: +91-9654133033, +91-9759003688
Address : C-20, C-21& C-22, UPSIDC, Naini Industrial Area, Allahabad, Uttar Pradesh-211008
Business Activity : Manufactures of duplex board

Claxa Chemicals Private Limited
Director - Vikransh Aggarwal
Email : Contact@claxachemicals.com
: +91-9818622294
Address : 8.3 km, Jansath Road, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh-251001
Business Activity : Manufactures of specialty chemicals for pulp and paper industry

Other Activities of Bharat Aggarwal :
1. Chairman - North Delhi Chapter (Ekal Abhiyan, Bharat Lok Shiksha Parishad)
2. President - Shani Dham (Jagat Chowk, Mangolpuri Kalan, Delhi)
3. Trustee - Shree Aggarsain International Hospital (Sector-22, Rohini, Delhi)
4. Trustee - Maharaja Agarsen Shiksha Sewa Trust (Nangloi, Delhi)

आज देश को भामाशाहों की आवश्यकता है

✍ शुकदेव

भारतीय संस्कृति में दान, परोपकार और सेवा करने की परंपरा प्राचीन काल से ही है। सेवा और दान यह संस्कार हमारे रक्त में ही है। हिंदू धर्म शास्त्रों में कुछ काम हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य बनाए गए हैं। उसमें से अपने सामर्थ्य के अनुसार दान करना भी एक महत्वपूर्ण काम है। धर्म ग्रंथों के अनुसार हर व्यक्ति को अपनी कमाई का न्यूनतम 10% भाग जरूरतमंदों को दान करना चाहिए। दान का मतलब है जो वस्तु स्वयं की इच्छा से प्रसन्न मन से किसी की सहायता करने के लिए उसे देकर वापस न ली जाए उसे हम दान कहते हैं। भारतीय परंपरा में दान को कर्तव्य और धर्म माना गया है।

दान देकर हम किसी पर एहसान नहीं करते, अपितु अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। आपके समर्पण का आदर करते हुए किसी ने आपके द्वारा दिया गया दान स्वीकार कर लिया तो आपको उसका धन्यवाद करना चाहिए, क्योंकि आपके दान को स्वीकार कर उसने आपको धन्य किया है। इसीलिए वह धन्यवाद और कृतज्ञता का पात्र है।

वैसे तो हमारे देश में दानवीरों की एक लंबी श्रृंखला है। समय-समय पर अनेक दानी और महादानी हुए हैं और किसी की भी किसी से तुलना नहीं की जा सकती। मगर कुछ दानवीरों की चर्चा करना बहुत आवश्यक है। जब संसार में दानवीरों की चर्चा होती है तो महर्षि दधीचि, राजा बलि, दानवीर कर्ण, हरीश चंद्र, राजा शिवि आदि नामों की चर्चा अवश्य होती है। इनमें से महर्षि दधीचि को छोड़कर सभी राज-पाठ करने वाले राजा थे।

महर्षि दधीचि के दान की चर्चा किए बिना दान के महत्व को रेखांकित नहीं किया जा सकता। आप कल्पना कीजिए एक ऋषि अपने आश्रम में अपनी गर्भवती पत्नी के साथ सुखपूर्वक रह रहे हैं और प्रतिदिन सुबह-शाम भगवान का भजन-पूजन, हवन-यज्ञ आदि कार्य करते हैं। जीवन ठीक प्रकार से चला रहा है। ऐसे में कोई आपसे आपके जीवन का दान मांग ले तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? लेकिन महर्षि दधीचि यह सब सुनकर भी अविचलित एकदम शांत खड़े हैं। देवराज इंद्र को यह सब कहने का साहस नहीं हो रहा था, वो बड़ी मुश्किल से महर्षि को अपनी बात कह पाने की हिम्मत कर पाए थे, लेकिन महर्षि वो तो जैसे इसी संदेश की प्रतीक्षा में थे। उन्हें तो जैसे पृथ्वी पर अपना कर्त्तव्य पूरा करने का अवसर मिल गया था। मानो इसी क्षण के लिए इतने समय से तपस्या कर रहे थे। जैसे ही देवराज इंद्र से ये संदेश सुना कि वृत्रासुर राक्षस का वध करने के लिए देवताओं को आपकी अस्थियों की आवश्यकता है और इसके लिए ब्रह्मा जी देवाताओं को आपके पास भेजा है। महर्षि का मन ब्रह्मा जी के प्रति कृतज्ञता से भर जाता है। उनकी

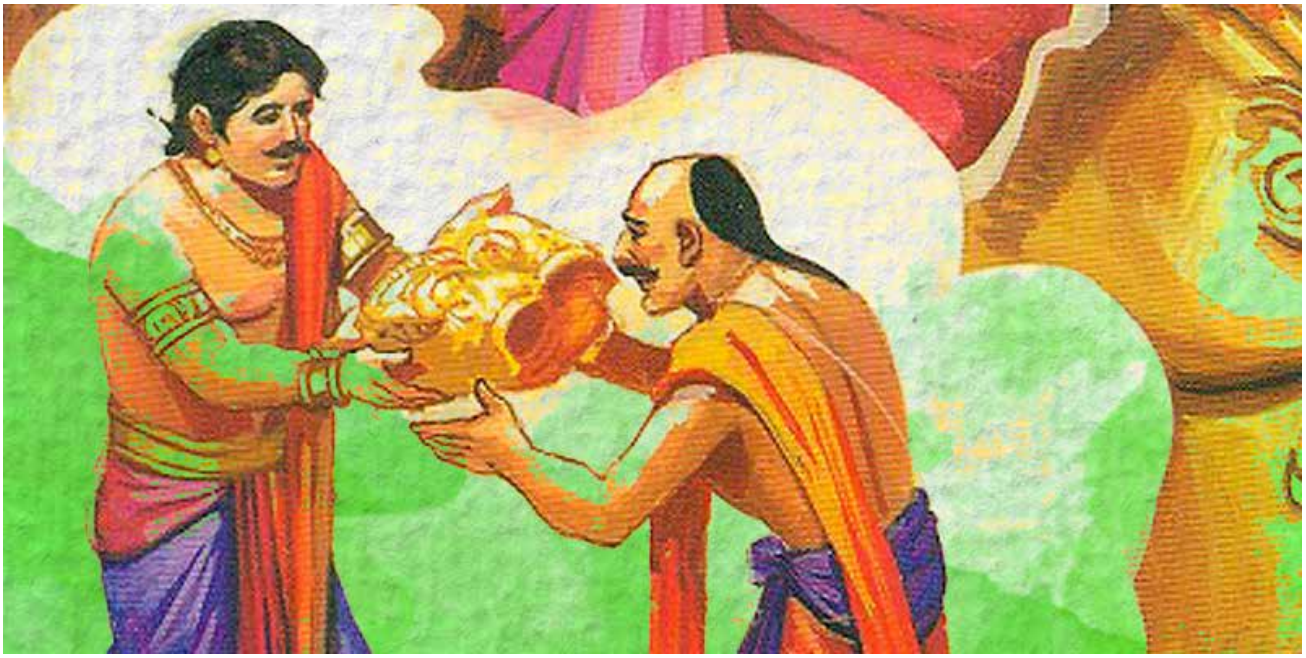

गर्भवती पत्नी व्याकुल हो जाती हैं, देवताओं पर नाराज भी होती हैं, अपने होने वाले बच्चे का वास्ता भी देती हैं, देवराज इंद्र से अपने और अपने बच्चे के भविष्य को लेकर प्रश्न भी करती हैं, परंतु देवराज निरुत्तर हैं। उनके पास ऋषि पत्नी के किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं है। ऋषि अपनी गर्भवती पत्नी को समझाते हैं और लोकहित में अपनी अस्थियों के दान की आवश्यकता और उसके महत्त्व और अपने कर्त्तव्य का बोध अपनी पत्नी को कराते हैं और उनकी सहमति प्राप्त करते हैं।

परोपकार के लिए, देवलोक की रक्षा के लिए ब्रह्मा जी की इच्छा को शिरोधार्य कर महर्षि अपने प्राणों को उत्सर्ग करने के लिए समाधिस्थ हो जाते हैं और अपनी अस्थियों को देवराज इन्द्र को समर्पित कर देते हैं, दान कर देते हैं। इतिहास में दान का ऐसा दूसरा कोई उदाहरण नहीं है।

इसी प्रकार राजा बलि के पास जब भगवान विष्णु वामन रूप में जाकर तीन कदम धरती का दान मांगते हैं तो राजा बलि भगवान विष्णु को पहचान लेते हैं। लेकिन अपने धर्म का, अपने वचन का पालन करने के लिए वे वामन रूपधारी प्रभु से तीन कदम भूमि मापने का आग्रह करते हैं और अपना सर्वस्व दान कर सहर्ष पाताल लोक में चले जाते हैं।

क्या दानवीर कर्ण को पता नहीं था कि ये कवच और कुंडल दान करने के बाद उसके जीवन पर कितना बड़ा संकट आने वाला है और वो भी युद्ध के बीच में। पितामह भीष्म मृत्यु शैय्या पर हैं, आचार्य द्रोण मारे जा चुके हैं और अब सारा युद्ध उसी के कंधों पर हैं। वहीं अब दुर्योधन की एकमात्र उम्मीद और हिम्मत है उसका जीवित रहना इस समय कितना आवश्यक है। ये सब जानते हुए भी अपने वचन और संकल्प का पालन करने के लिए कर्ण अपने कवच और कुंडल दान कर देते हैं।

धन्य हैं ऐसे दानवीर और उनकी परंपरा जो सैकड़ों हजारों साल से एक प्रकाशपुंज की तरह हमें रास्ता दिखा रहे हैं।

इस कड़ी में अगर भामाशाह जी का जिक्र नहीं किया तो लिखने का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पायेगा। जब राणा प्रताप अपने सबसे कठिन समय से गुजर रहे थे, राज चला गया था, जंगल में रहने को विवश थे, घास की रोटी खाने की नौबत आ गई थी। ऐसे समय में भामाशाह राणा जी के पास गए और अपने चित्तौड़ के लिए, अपने देश के लिए, सुराज के लिए राणा जी से फिर उठ खड़े होने की विनती करते हैं, फिर सेना तैयार करने का आग्रह करते हैं और अपना सारा धन राणा को सौंप देते हैं।

भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ। मातृभूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप का सर्वस्व होम हो जाने के बाद भी उनके लक्ष्य को सर्वोपरि मानते हुए अपनी संपूर्ण धन-संपदा अर्पित कर दी। यह सहयोग तब दिया जब राणा प्रताप अपना अस्तित्व बनाए रखने के प्रयास में निराश होकर परिवार सहित पहाड़ियों में छुपते भटक रहे थे मेवाड़ की अस्मिता की रक्षा के लिए।

भामाशाह अपनी दानवीरता के कारण इतिहास में अमर हो गए। भामाशाह के सहयोग ने ही महाराणा प्रताप को जहां संघर्ष की दिशा दी, वहीं मेवाड़ को भी आत्मसम्मान दिया। भामाशाह की दानवीरता के प्रसंग आसपास के इलाकों में बड़े उत्साह के साथ सुने और सुनाए जाते थे। हल्दी घाटी के युद्ध में पराजित महाराणा प्रताप के लिए उन्होंने अपनी निजी संपत्ति में इतना धन दिया था कि जिससे 25000 सैनिकों का 12 वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। भामाशाह के सहयोग से महाराणा प्रताप में नया उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने उन्हें सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित किया और फिर से मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया।

भामाशाह बहुत विशाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे। सम्मान और त्याग की यह भावना उनको स्वदेश धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देशभक्त के रूप में निखार कर स्थापित कर देती है। उनकी दानवीरता के चर्चे कुछ इस प्रकार बड़े उत्साह के साथ गाए जाते थे-

धन्य देश की माटी है जिसमें
भामाशाह सा लाल पला,
उस दानवीर की इस गाथा को
मिटा सका क्या काल भला।

आज देश को ऐसे ही भामाशाहों की आवश्यकता है। हम सब भारत को वैभवशाली रूप में देखना चाहते हैं। हम पुनः भारत माता को विश्व गुरु के सिंहासन पर विराजमान देखना चाहते। लेकिन यदि अपने समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी अभावों में जी रहा है, जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है, तो कैसे हम परम वैभव को प्राप्त कर पाएंगे? इसलिए आइए एक सशक्त, समृद्ध और वैभवशाली राष्ट्र के निर्माण में हम अपना योगदान दें और भामाशाह जी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हम भी अपने देश के वंचित एवं अभावग्रस्त लोगों को गले लगाएं। ■

(लेखक सेवा भारती के संगठन मंत्री हैं)

दान-धर्म से बड़ा कोई पुण्य और धर्म नहीं

✍ **जगराम भाई**

सफल जीवन उसी का है जो मनुष्य जीवन प्राप्त कर अपना कल्याण कर ले। भौतिक दृष्टि से तो जीवन में सांसारिक सुख और समृद्धि की प्राप्ति को ही अपना कल्याण मानते हैं, परंतु वास्तविक कल्याण है-सदा सर्वदा के लिए जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होना अर्थात भगवद् प्राप्ति। अपने शास्त्रों तथा अपने पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने सभी युगों में इसका उपाय बताया है। चारों युगों में अलग-अलग चार बातों की विशेषता है- सतयुग में तप, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलियुग में एकमात्र दान मनुष्य के कल्याण का साधन है। दान श्रद्धापूर्वक करना चाहिए, विनम्रतापूर्वक देना चाहिए। दान के बिना मानव की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है।

एक बार देवता, मनुष्य और असुर तीनों की उन्नति अवरुद्ध हो गई। अत: वे पितामह प्रजापति ब्रह्मा जी के पास गए और अपना दुख दूर करने के लिए उनसे प्रार्थना करने लगे। प्रजापति ब्रह्मा ने तीनों को मात्र एक अक्षर का उपदेश दिया- 'द।' स्वर्ग में भोगों के बाहुल्य से, देवगण कभी वृद्ध न होना सदा इंद्रिय भोग भोगने में लगे रहते हैं, उनकी इस अवस्था पर विचार कर प्रजापति ने देवताओं को 'द' के द्वारा दमन, इंद्रिय दमन का संदेश दिया। असुर स्वभाव से हिंसा वृत्ति वाले होते हैं, क्रोध और हिंसा इनका नित्य व्यापार है। अत: प्रजापति ने उन्हें दुष्कर्म से छुड़ाने के लिए 'द' के द्वारा जीव मात्र पर दया करने का उपदेश दिया/ मनुष्य कर्मयोगी होने के कारण सदा लोभवश कर्म करने तथा धनोपार्जन में लगे रहते हैं, इसलिए 'द' के द्वारा उनके कल्याण के लिए दान करने का उपदेश दिया। विभव और दान देने की सामर्थ्य अर्थात मानसिक उदारता- ये दोनों महान तप के ही फल हैं। विभव होना तो सामान्य बात है पर उस विभव को दूसरों के लिए देना यह मन की उदारता पर निर्भर करता है। यही है दान शक्ति जो जन्म-जन्मांतर के पुण्य से प्राप्त होती है।

दान की महिमा के सन्दर्भ में यजुर्वेद में कहा है यथा- "देवो देवेसु देव:" ऊँ अर्थात् देवों में दानादि गुणों से युक्त ही देव होता है। तैत्तरीय आरण्यक में कहा है-"दान मिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति, दानानाति दुष्करम्।" यानी सभी प्राणी दान की प्रशंसा करते हैं। दान से बढ़कर अन्य कुछ भी दुर्लभ नहीं है। याचक मर जाता है, पर दाता कभी नहीं मरता। दानी कभी दुख नहीं पाता। दान से समस्त दुख कट

जाते हैं, यहाँ तक कि शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। दान से धर्म का मार्ग साफ रहता है। धन की उत्तम गति दान ही है। सच्चा दानी प्रसिद्धि की अभिलाषा भी नहीं करता। दान के कारण ही मानव देवत्व को पाता है। व्यास भगवान ने दान धर्म को निम्न भागों में विभक्त किया है-

नित्य दान : प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामर्थ्य अनुसार कर्तव्य बुद्धि से नित्य कुछ न कुछ दान करना चाहिए। असहाय एवं गरीबों को नित्यप्रति सहायता रूप में दान करना कल्याण ाकारी है। शास्त्रों में प्रत्येक गृहस्थ के पांच प्रकार के ऋणों- देवऋण, पितृऋण, ऋषिऋण, भूत ऋण और मनुष्य ऋण से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन पांच महायज्ञ करने का प्रावधान है। अध्ययन-अध्यापन ब्रह्म यज्ञ-ऋषि ऋण से मुक्ति, श्राद्ध तर्पण करना पितृयज्ञ, पितृऋण से मुक्ति, हवन पूजन करना देव यज्ञ देव ऋण से मुक्ति, बलिवैश्व देव यज्ञ करना अर्थात सारे विश्व को भोजन देना। भूत यज्ञ-भूतऋण से मुक्ति और अतिथि सत्कार करना मनुष्य यज्ञ अर्थात मनुष्य ऋण से मुक्ति। अत: गृहस्थ को यथासाध्य प्रतिदिन इन्हें करना चाहिए।

नैमित्तिक दान : जाने-अनजाने में किए गए पापों को शमन हेतु तीर्थ आदि पवित्र देश में तथा अमावस्या, पूर्णिमा, व्यतिपात, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि पुण्यकाल में जो दान किया जाता है उसे नैमित्तिक दान कहते हैं।

काम्य दान : किसी कामना की पूर्ति के लिए, ऐश्वर्य, धन धान्य, पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति तथा अपने किसी कार्य की सिद्धि हेतु जो दान दिया जाता है उसे काम्य दान कहते हैं।

विमल दान : भगवान की प्रीति प्राप्त करने के लिए निष्काम भाव से बिना किसी लौकिक स्वार्थ के लिए दिया जाने वाला दान विमल दान कहलाता है। देश, काल और पात्र को ध्यान में रख कर अथवा नित्यप्रति किया गया दान अधिक कल्याणकारी होता है। यह सर्वश्रेष्ठ दान है। देवालय, विद्यालय, औषधालय, भोजनालय, अनाथालय, गौशाला, धर्मशाला, कुएं, बावड़ी, तालाब आदि सर्वोपयोगी स्थानों पर निर्माण आदि कार्य यदि न्यायोपार्जित द्रव्य से बिना यश की कामना से भगवद प्रीत्यर्थ किए जाएं तो परम कल्याणकारी सिद्ध होंगे। न्यायपूर्वक अर्जित धन का दशमांश मनुष्य को दान कार्य में ईश्वर की प्रसन्नता के लिए लगाना चाहिए। दानशील मनुष्य वही होता है जो करुणावान हो, त्यागी हो और सत्कर्मी हो। एक अच्छे मानव में ही दानशीलता का गुण होता है। जिसके हृदय में दया नहीं वह दानी कभी नहीं हो सकता और वह दान ऐसा हो जिसमें बदले में उपकार पाने की कोई भावना न हो।

दाधीचि का दान, कर्ण का दान और राजा हरिश्चंद्र के दान ऐसे ही दान की श्रेणी में आते हैं। अथर्ववेद में लिखा है कि सैकड़ों हाथों से कमाना चाहिए और हजार हाथों वाला होकर समदृष्टि से दान देना चाहिए। किए हुए कर्म का और आगे किए जाने वाले कर्म का विस्तार इसी संसार में और इसी जन्म में करना चाहिए। हमें इसी संसार में और इसी जन्म में जितना संभव हो सके दान करना चाहिए। यदि हम ईश्वर की अनुभूति के अभिलाषी हैं तो हमें उसकी संतान की सहायता हरसंभव करनी चाहिए। ईश्वर का अंश हर मानव में मौजूद है। हमारा कर्तव्य है कि हम उसके बनाए जीव की यथासंभव सहायता करें। यदि हम प्रकृति से कुछ सीख लें तो वृक्ष भी परोपकार के लिए फल देते हैं। नदियों का जल भी परोपकार के लिए होता है। शास्त्रों में परोपकार का फल अंत:करण की शुद्धि के लिए जरूरी कहा गया है। यह सच ही है, क्योंकि परोपकार और दान हम तभी करते हैं, जब हम सब प्राणियों के प्रति आत्मवत हों। हम यह अहसास करें कि हर जीव परमात्मा की संतान होने के नाते एक दूसरे से जुड़ा है। इसलिए दूसरे की पीड़ा जब हम स्वयं में महसूस करेंगे तभी दूसरों की सहायतार्थ आगे बढ़ेंगे। दूसरों की वेदना से व्यथित व्यक्ति ही सहृदयी हो सकता है। जो कोमल भावनाएं अपने अंतर्मन में रखता है, वह दैवीय गुणों से संपन्न है और जब दैवीय गुण अंतस में पनपते हैं तो अंत:करण स्वत: शुद्ध हो जाता है। यह निर्विकार सत्य है कि हम अगर दूसरों की सहायता करते हैं तो हमें शांति मिलती है। दानशीलता भी सत्य धर्म है। रामचरितमानस में तुलसीदास कहते हैं कि परहित के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। कहते हैं विद्यादान महादान यानी विद्या का दान सर्वोपरि है। यदि हम धन से वस्त्र का दान देंगे, तो वह बहुत बड़ा दान नहीं, किंतु यदि हम किसी दूसरे व्यक्ति को विद्या का दान देते हैं तो इससे उसका सारा जीवन सुखमय हो जाएगा। किसी के मन का अंधकार दूर कर ज्ञान का आलोक देना ब्रह्मादान है।

दान का साधारण अर्थ है किसी वस्तु पर से अपना अधिकार समाप्त करके दूसरे का अधिकार स्थापित करना। इसके बदले में कोई भी वस्तु नहीं ली जाती। दान का तात्विक अर्थ है-अपने द्वारा न्याय के रास्ते से उपार्जित अन्न-धन आदि देने योग्य पदार्थ को अपनी शक्ति के अनुसार सत्पात्र को देना। अपनी संपत्ति को दूसरों की संपत्ति बना देना। किन्तु दान की पूर्ति तभी मानी जाती है जब दान में दी हुई वस्तु पर पाने वाले का अधिकार स्थापित हो जाए। पाने वाले के पाने के पहले ही वह वस्तु नष्ट हो जाए तो वह दान नहीं है।

दान कई प्रकार के हैं, जैसे अन्न-दान, जल दान, धन दान, प्राण दान, क्षमा दान, अभयदान आदि। आधुनिक युग में

तो और भी कई दानों के नाम जुड़ गये हैं-जैसे-जीवन दान, भूमि-दान, समय दान, श्रम दान, रक्त दान, नेत्र दान आदि। ये तो सब नये अभियान (प्रयत्न) हैं जो चलाए जाते हैं।

सच्चा दान दो प्रकार का होता है। एक वह जो श्रद्धा से दिया जाता है। दूसरा वह जो दया से दिया जाता है। पंडितों और विद्धानों को जो दान दिया जाता है, वह श्रद्धावश दान है। अंधों, लूलों और लंगड़ों को जो दान दिया जाता है, वह दयावश दिया जाता है। श्रद्धावश दिया जाने वाला दान ही महत्व पूर्ण दान है। श्रद्धावश दिया दान ही सफल माना जाता है। अश्रद्धा से दिया दान निष्फल माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के ये विचार हैं।

गीता में दान की तीन कोटियाँ कही गई हैं- उत्तम, मध्यम और अधम दान। बिना किसी के याचन किये हुए स्वयं जाकर जो दान दिया जाता है वह सर्वोत्तम है। बुलाकर देना मध्यम है, माँगने पर देना अधम है। अवहेलना और श्रद्धा के बिना दिया दान भी अधम है। सेवा कराकर देना तो सर्वथा निष्फल और व्यर्थ है।

अतः हमें पूर्ण प्रसन्नता से दान देना चाहिए। श्रद्धा से भरे दान की महिमा है। यह दान थोड़ा होने पर भी थोड़ा नहीं है। इस थोड़े दान से भी भगवान प्रसन्न हो जाते हैं। दान ही मानव जाति को अन्न प्रदान करता है। किन्तु अब कलियुग है। आज के युग में चाहे मन से इच्छा भी न हो जबरदस्ती किसी के डर से किया हो, जैसा भी हो दान कल्याण ही करेगा। श्रुति की आज्ञा है कि अपने ऐश्वर्य के अनुसार श्रद्धा, अश्रद्धा, लज्जा अथवा डर से, जानकर या अनजाने में चाहे जैसे दें, पर दान अवश्य देना चाहिए (जेन केन विधि)।

जिसने कभी उपकार न किया हो ऐसे मनुष्य को दिया जानेवाला दान सात्विक है।

पात्रोचित दानः महाभारत में विस्तार से बताया है कि भूखे को भोजन और प्यासे को पानी देने के अतिरिक्त अन्य सभी दानों में पात्र-अपात्र का, देश, काल इन सब बातों पर विचार कर लेना चाहिए। सत्पात्र को दिया दान कभी नष्ट नहीं होता। श्रद्धावान पुरुष न्याय से प्राप्त अपने धन का सत्पात्र के लिए जो दान करते हैं वह थोड़ा भी हो, तो भी उसी से भगवान प्रसन्न हो जाते हैं।

निकृष्ट दानः निकृष्ट दान वह है जिसमें देने वाले का लाभ हो किन्तु, पाने वाला नष्ट हो जाय। किन्तु अंतिम परिणाम, जो हाथ उठाकर मछलियों को फंसाने के लिए जल में दाना देते हैं यानी चारा देते हैं उस दान को पाने वाली मछलियाँ तो जीती नहीं हैं, और वह दाता भी नरकों में जाता है।

माँगकर लाई हुई, धरोहर के रूप में रखी हुई दान में मिली, वस्तु या धन को दूसरों को दान में देना वर्जित है। जो स्वयं दीन है, वह दानी नहीं हो सकता। वास्तव में कुटुंब के भार, भरण, पोषण के बाद जो बचता हो वही वस्तु दान करने योग्य है। हम भगवान से प्रार्थना करें कि वे हमें इतना दें कि हम अपना भी पेट भर लें और दूसरों का भी भरें।

अभ्युदायिक दान का समय सभी शुभ अवसरों, शादी के समय, एक नवजात शिशु के मंदिर में अभिषेक संस्कार के समय, अच्छी तरह से अपनी क्षमता के अनुसार दान किया जाता है उसे दान के लिए अभ्युदायिक समय कहा जाता है।

इस दान को करने वाला सभी प्रकार की सिद्धि को प्राप्त करता है। मनुष्य को मरते समय शरीर को नश्वर जानकर दान करना चाहिए। इस दान से यम लोक रास्ते में आप सभी प्रकार के आराम को प्राप्त करते हैं। जहां ब्राह्मण उपलब्ध नहीं हैं, वहां मूर्तियों में रहने वाले देवता को दान करना चाहिए। मूर्तियों में रहने वाले देवता से दान का फल बहुत देर से मिलता है, तो मनुष्य को ब्राह्मण, जरूरतमंद, गरीब को दान करना चाहिए, जिसका फल तुरन्त ही अवश्य मिलता है। आज हमें जिस प्रकार का वातावरण सर्वत्र दिखाई दे रहा है वह वास्तव में दान की महिमा को प्राण प्रतिष्ठित करने कि बजाय व्यवसाय सा प्रतीत होता दिख रहा है। परिणामतः दान की महिमा तो तभी होती है जब वह निस्वार्थ भाव से किया जाता है। अगर कुछ पाने की लालसा में दान किया जाए तो वह व्यापार बन जाता है। यहाँ समझने वाली बात यह है कि देना उतना जरूरी नहीं होता जितना कि 'देने का भाव'। अगर हम किसी को कोई वस्तु दे रहे हैं लेकिन देने का भाव अर्थात इच्छा नहीं है तो वह दान झूठा हुआ, उसका कोई अर्थ नहीं।

दान का सच्चा अर्थ ही यही है कि देने में आनंद, एक उदारता का भाव, प्राणी मात्र के प्रति एक प्रेम एवं दया का भाव है, किन्तु जब इस भाव के पीछे कुछ पाने का स्वार्थ छिपा हो तो क्या वह दान रह जाता है? गीता में भी लिखा है कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो हमारा अधिकार केवल अपने कर्म पर है उसके फल पर नहीं।

अतः देने की इस क्रिया से हम कुछ हद तक अपने मोह पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। दान देना हमारे विचारों एवं हमारे व्यक्तित्व पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। इसलिए हमारी संस्कृति हमें बचपन से ही देना सिखाती है न कि लेना। हमें अपने बच्चों के हाथों से दान करवाना चाहिए, ताकि उनमें यह संस्कार बचपन से ही आ जाएं। देना तो हमें प्रकृति रोज सिखाती है, सूर्य अपनी रोशनी, फूल अपनी खुशबू, पेड़ अपने फल, नदियाँ अपना जल, धरती अपना सीना छलनी कर के भी दोनों हाथों से हम पर अपनी फसल लुटाती है। इसके बावजूद न तो सूर्य की रोशनी कम हुई, न फूलों की खुशबू, न पेड़ों के फल कम हुए न नदियों का जल। अतः दान एक हाथ से देने पर अनेक हाथों से लौटकर हमारे ही पास वापस आता है। बस शर्त यह है कि निस्वार्थ भाव से श्रद्धापूर्वक समाज की भलाई के लिए किया जाए। किसी भी वस्तु का दान करते रहने से विचार और मन में खुलापन आता है। आसक्ति (मोह) कमजोर पड़ती है, जो शरीर छूटने या मुक्त होने में जरूरी भूमिका निभाती है। हर तरह के लगाव और भाव को छोड़ने की शुरुआत दान और क्षमा से ही होती है। दानशील व्यक्ति से किसी भी प्रकार का रोग या शोक भी नहीं चिपकता है। बुढ़ापे में मृत्यु सरल हो, वैराग्य हो इसका यह श्रेष्ठ उपाय है और इसे पुण्य भी माना गया है। दान धन का ही हो, यह कतई आवश्यक नहीं। भूखे को रोटी, बीमार का उपचार, किसी व्यथित व्यक्ति को अपना समय, उचित परामर्श, आवश्यकतानुसार वस्त्र, सहयोग, विद्या यह सभी जब हम सामने वाले की आवश्यकता को समझते हुए देते हैं और बदले में कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करते, यह सब दान ही है। ■

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक हैं)

SIGNATURE GLOBAL

SIGNATUREGLOBAL COMTRADE PVT LTD

OFFICE :

230-232, D-Mall, Netaji Subhash Place,
Pitampura, New Delhi
Ph:011-45114511, M: 9250668689

क्या है सेवा

✍ विनोद कुमार बनावरा

सेवा एक ऐसा शब्द है, जो हमारे मानव होने का परिचय देता है, हमारे मनुष्य होने की पहचान करवाता है, उसका परिचायक है। सेवा कई तरह की हो सकती है- समाज सेवा, मानव सेवा, देश सेवा आदि। सेवा एक बहुत ही पुण्य कार्य है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सेवा का अर्थ है मन से निस्वार्थ होकर दूसरों के हित में कार्य करना। स्वार्थपरक किया गया कर्म सेवा नहीं कहलाती है। सतुलसीदास जी ने कहा है-'परहित धर्म सरस नहीं भाई।'

व्यक्ति और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति का समाज से अटूट संबंध है। इसलिए व्यक्ति की जिम्मेदारी समाज की भलाई के लिए बनती है। युगों-युगों से व्यक्ति ने इस सेवा के महत्व को समझा भी है और सेवाभाव को अपनाया भी है।

सारी प्रकृति निस्वार्थ समर्पण का संदेश देती है। सूरज आता है रोशनी देकर चला जाता है। चंद्रमा, वृक्ष यह सब परोपकार के प्राकृतिक उदाहरण हैं। सेवा का भाव व्यक्ति को जीवन में सर्वाधिक आत्मसंतोष प्रदान करता है। कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्होंने अपना जीवन समाज व देश सेवा को समर्पित कर दिया। कई देशभक्त ऐसे हैं, जिन्होंने अपने जीवन को देश के लिए समर्पित कर दिया। सेवा व्यक्ति को आत्मसंतुष्टि प्रदान करती है। निस्वार्थ भाव से किया गया कर्म मनुष्य को संतुष्टि प्रदान करता है। माता-पिता आज के दौर में सबसे उपेक्षित हैं। जिस तरह से आज का युग एकाकी होता जा रहा है, आधुनिकीकरण की वजह से माता-पिता उपेक्षित होते जा रहे हैं। आज सबसे ज्यादा सेवा की आवश्यकता है वृद्धजन और माता-पिता का। यदि माता-पिता या वृद्ध जनों की सेवा नहीं की तो मनुष्य जीवन व्यर्थ है। दूसरों की सेवा मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। जयशंकर प्रसाद ने लिखा है- 'औरों को हंसता देखो मनु, हंसो और सुख पाओ। अपने सुख को विस्तृत कर लो सब को सुखी बनाओ।'

मनुष्य का जीवन सिर्फ अपने जीने में नहीं, सर्व कल्याण में है। स्वार्थी होने में नहीं, निस्वार्थ होने में है। भोगने में नहीं त्यागने में है। छीनने में नहीं, समर्पण में है। सच्चा सुख अपने जीने में नहीं निस्वार्थ होकर परोपकार करने में है। दूसरों की सेवा करने में है। मनुष्य के पास बुद्धि है, संवेदनशील हृदय है जो दूसरों के लिए सोच सकता है और दूसरों के दुख को दूर कर सकता है। मनुष्य का सच्चा धर्म दूसरों की सेवा में ही है।

अतः मनुष्य को चाहिए कि उसका जो कर्म है, कर्तव्य है समाज के प्रति, देश के प्रति, माता-पिता वृद्ध जनों के प्रति उसे अच्छी तरह निभाए। ■

(लेखक एस.के. महाविद्यालय, जयपुर में हिंदी के व्याख्याता हैं।)

VIPUL RAJ GROUP

INDUSTRIAL DEVELOPER & ADVISOR

CHAIRMAN
VIPUL RAJ GROUP

+91 7685000000, +91 8080600000

VRG Clinic & Lab

Z7 PHARMACY

NIGHT RIDER
24X7 Retail Stores

STUDIO COLIV
INTERIOR | ARCHITECTURE | DESIGNING

ADDRESS - PLOT NO. 34, NORTH AVENUE ROAD,
WEST PUNJABI BAGH, DELHI - 110026

Sudoku TM
revolution
L M ®
FOOTWEAR
एक अनमोल तोहफा !
Art No. FOSTER-2
Size:6x9,7x10
Art No. FLYE-21
Size:6x9,7x10
Art No. EGO-2
Size:6x9,7x10
Art No. BIG-506
Size:6x9,7x10
Art No. PATHANI-1
Size:6x9,7x10
Art No. LARA-102
Size:6x9,7x10
Art No. RELAX-01
Size:6x9,7x10
Art No. RELAX-14
Size:6x9,7x10
Art No. KITKAT-1
Size:4x7,5x8
Art No. VARRSHA-1
Size:4x7,5X8
From:-
Asimo
A Group of BRMK INDIA Pvt. Ltd.
For Trade Enquiry Contact :
Deepak Garg-9891064214, Neeraj Garg-9811164207
Email: info@asimoshoes.com

सेवाभावी और सदाचारी बनिए

✍ वीरेन्द्र कुमार शर्मा

परमपिता परमात्मा ने इस धरती पर हम मनुष्यों का जन्म, जरूरतमंद लोगों की निस्वार्थ सेवा करने के लिए ही प्रदान किया है। जीवन में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि लोगों की ज्यादा से ज्यादा सेवा करके उन्हें सुखी और समृद्धिवान बनाया जाए। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि 'करोगे सेवा, तो मिलेगी मेवा।'

सबसे पहले मनुष्य को अपने माता-पिता की जीवन भर सेवा करनी चाहिए, ताकि वे सुखी और स्वस्थ्य रहें, उन्हें किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं होने पाये। जो व्यक्ति अपने माता-पिता को दु:ख के आँसुओं से रुलाता है वह स्वयं अपने जीवन में कभी भी सुखी नहीं रह सकता। अगर कोई मनुष्य अपने जन्म-जन्मान्तरों से इसी जन्म में छुटकारा पाना चाहता हो तथा मोक्ष पाना चाहता हो तो उन्हें सदैव अपने माता-पिता की सेवा करने के साथ-साथ, अपने परिवारजन एवं मानव समाज के जरूरतमंद व्यक्तियों की सेवा करने का कार्य, भगवान की सेवा जानकर, अपनी परम जिम्मेदारी समझते हुए निरंतर तत्परता से करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति जरूरतमंदों की हर तरह से मदद करते हैं तथा उनकी सेवा-सुश्रूषा करते हैं, उनका पूरा परिवार अपने जीवनकाल में खुशहाल और समृद्धिवान रहता है।

निस्वार्थ भाव रखते हुए, परिवार सहित सामाजिक हित में लगातार कार्य करते रहना ही मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। सभी की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने से हमेशा अच्छे संस्कार मिलते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जीवन में उन्नति और कामयाबी पाने के लिए सेवा और सदाचार दोनों का बहुत बड़ा योगदान होता है। मनुष्य को अपने जीवन काल में सफल होने के लिए 'सेवा और सदाचार' को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेना चाहिए। इसीलिए यह मान्यता भी है कि निस्वार्थ सेवा भावना रखना ही मनुष्य के उच्च संस्कारों की पहचान होती है। सेवा करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर सदैव मुस्कराहट रहती है। सेवा और सहयोग का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इसके आधार पर ही संसार में उन्नति और प्रगति हासिल होती है।

यदि समाज में जहाँ पारस्परिक सेवा, सद्भाव के सहयोग का अभाव रहता है वहाँ परिवारों और समाजों में आपसी लड़ाई-झगड़े और क्लेशों की स्थितियाँ बनी रहती हैं तथा ऐसी परिस्थितयों में मानव जाति की सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नतिशीलता रुक जाती है।

अत: हमें समाज में जो रोगी, असहाय, अपंग, वृद्ध और बेसहारा होते हैं, जिनमें जीवन निर्वाह की शक्ति नहीं होती है, उन्हें दूसरों से सेवा, सहायता और सहयोग लेने की अपेक्षा रहती है। ऐसी प्रकृति के लोगों की निस्वार्थ भाव से, सेवा करने से, मनुष्य का अहंकार भाव नष्ट होने लगता है। अत: प्रत्येक मनुष्य के जीवन में निस्वार्थ भाव से सेवा करने का बहुत बड़ा महत्व होता है। ■

(लेखक जयपुर आधारित सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

सिख मान्यताओं में सेवा और दान का महत्व

✍ पन्नालाल

सिख मत के प्रवर्तक श्री गुरु नानकदेव जी के बचपन की एक घटना अनुसार नानक के पिता ने उन्हें व्यापार करने के लिए 20 रुपए दिए और कोई ऐसा सौदा करने के लिए कहा जिसमें लाभ हो। तो बाल-नानक ने रास्ते में आ रहे, साधु-संन्यासियों को देखा। वह बड़ी तन्मयता से भजन-कीर्तन कर रहे थे। नानक ने सोचा इनकी सेवा से बड़ा कोई सौदा नहीं हो सकता। इसमें तो लाभ ही लाभ है। उन्होंने 20 रुपए के चावल, आटा, घी इत्यादि रसद खरीदने में खर्च कर दिए और उनको तृप्त करके घर को लौट आए। आकर पिता को पूरी बात बताई कि मैंने सच्चा-सौदा किया है। इसमें बहुत ही फायदा होगा।

दूसरी घटना के अनुसार जब उनको नवाब के भण्डार-घर पर हिसाब-किताब करने की नौकरी पर रखा गया। उन्होंने गरीब व भूखे लोगों के लिए अन्न के भण्डार खोल दिए। कुछ लोगों का कहना था कि नानक ने भण्डार खाली करवा दिया है। उनकी शिकायत की गई और जाँच हुई तो परमात्मा की कृपा से अनाज पूरा निकला।

अगली घटना दशमगुरु श्रीगुरु गोविंद सिंह जी के समय की है। जब गुरुजी जुल्म का विरोध करते हुए युद्ध लड़ रहे थे, उस समय भाई कन्हैया जी, गुरु जी की सेना को पानी पिलाने की सेवा करते थे। पर भाई कन्हैया जी सिर्फ गुरु जी की सेना को ही नहीं, बल्कि दुश्मन की सेना को भी निडर होकर पानी पिलाते थे। वो सेवा करते समय कभी यह नहीं सोचते थे कि जिसे वो पानी पिला रहे है, वो दोस्त हैं या दुश्मन। भाई कन्हैया जी की इस सेवा से नाराज होकर गुरुजी की सेना के कुछ लोग गुरुजी के पास पहुंचे और कहा कि

भाई कन्हैया जी अपनी सेना के साथ-साथ दुश्मनों को भी पानी पिला रहे हैं, उन्हें रोका जाए।

गुरुजी ने भाई कन्हैया जी को बुलाया और कहा- तेरी शिकायत आई है। भाई कन्हैया जी ने शिकायत सुनी और कहा, गुरु साहिब जी! मैं क्या करूं... मुझे तो जंग के मैदान में कोई नजर ही नहीं आता। मैं जहां भी देखता हूं, मुझे सिर्फ आप नजर आते हैं और मैं जो भी सेवा करता हूं वो सब आपकी ही होती है। उन्होंने कहा, हे गुरु साहिब जी, आपने कभी भेदभाव करने का पाठ सिखाया ही नहीं।

गुरु गोविंद सिंह जी,भाई कन्हैया जी की बात सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा कि भाई कन्हैया जी आप गुरु घर के उपदेशों को सही मायने में समझ गए हैं। गुरुजी ने शिकायत करने आए लोगों से कहा कि हमारा कोई दुश्मन नहीं है। किसी धर्म या व्यक्ति से अपनी कोई दुश्मनी नहीं है। दुश्मनी है, जालिम के जुल्म से... ना कि किसी इंसान से। इसलिए सेवा करते समय सभी को एक जैसा ही मानना चाहिए।

गुरु गोविंद सिंह जी ने भाई कन्हैया जी को मलहम और पट्टी भी दी और कहा, 'जहां आप पानी पिलाते हैं वहां दवाई लगाकर भी सब की सेवा कीजिए।'

यही परम्परा दसों गुरुओं के माध्यम से जन-जन तक पहुंची। सिख मत की मान्यताओं के अनुसार दान करने से इंसान के भीतर त्याग और बलिदान की भावना आती है। दान करने के कई मनोवैज्ञानिक लाभ भी मिलते हैं। दान करने से मन और विचारों में खुलापन आता है। दान से मोह की शक्ति कमजोर पड़ती है। कहा जाता है कि हर तरह के लगाव और भाव को छोड़ने की शुरुआत सेवा, दान और क्षमा से ही होती है।

दान करने से दान करने वाले व्यक्ति के अहम और मोह का त्याग होता है। दान करने से मन की कई ग्रंथियां खुलती हैं। दान करने से अपार संतुष्टि मिलती है। दान करने से कई तरह के दोष मिट सकते हैं। सभी प्रकार के लोभ को त्याग कर हमें अपने हाथों से मेहनत करना और न्यायोचित तरीके से धन कमाना चाहिए। किसी का हक नहीं छीनना चाहिए। जरूरतमंदों की मदद करें। धन को जेब तक ही सीमित रखें, उसे दिल में जगह नहीं दें। अन्यथा नुकसान हो सकता है। सेवा व दान की उक्त भावना आज भी अपनी पवित्रता के साथ प्रचलित है।

कालान्तर में गुरु नानक जी द्वारा 20 रुपये से शुरू किया गया वह लंगर आज भी अविराम चल रहा है। प्राकृतिक आपदा हो, मानव-निर्मित कोरोना जैसी महामारी या कोई भी अन्य संकट हो। हर प्रकार की सेवा व लाखों भूखे लोगों का पेट भरने की बात हो। हर स्थान पर गुरु के सिख तन, मन और धन से सेवा करने को तत्पर मिलेंगे। ■

(लेखक सेवा भरती, दक्षिणी विभाग के संगठन-मंत्री हैं)

सेवा से ही झंकृत होगा वन्देमातरम्

✍ डॉ. सर्वेश कुमार मिश्र

अथर्ववेद (12.1.12) में कहा गया है-माताभूमिः पुत्रो हं पृथिव्याः। अर्थात् मातृभूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। आगे अथर्ववेद (अथर्व. 19.37.3)में कहा गया है- "राष्ट्र भृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय।" राष्ट्र सेवा और शतायु होने के लिए मैं अपने को दृढ़ बनाता हूँ। मेरा मानना है कि वेदों का यह भाव सेवाभाव के कारण ही जीवन से अनुस्यूत हो सकता है। 'सेवा' शब्द दिखने में जितना छोटा है उसको आत्मसात करना उतना ही कठिन। इस भाव की कमी के कारण व्यक्ति, समाज व राष्ट्र अपने लक्ष्य से भटक जाता है। जीवन को परिभाषित करना आसान नहीं है। भटकाव और गाड़ी नाव और नाव गाड़ी के ऊपर कब आरूढ़ हो जाए कहा नहीं जा सकता। सेवा का भाव आते ही मानस में दया, ममता, करुणा का भाव अनायास ही आ जाता है और यह भी कहा जा सकता है कि सारे

भाव एक-दूसरे के पूरक हैं। सेवा का भाव ही इतना बड़ा है कि घास की रोटी खाना स्वीकार कर लिया पर देश के प्रति सेवा का कर्त्तव्य कम होने नहीं दिया।

पूरा श्रीरामचरितमानस क्या है? सेवा और त्याग ही तो है। गुरुगोविंद सिंह जी के बच्चे 'राष्ट्र प्रथम' के भाव को सर्वोपरि रखते हुए मातृभूमि के लिए बलिदान हो गए। आजादी के बाद आजाद होने की छटपटाहट ने सबसे बड़ा नुकसान इसी भाव को किया। अब तो मुहल्ले में वृद्धाश्रम खुल रहे हैं। हकीकत इतनी भयानक है कि वर्णन कर नहीं सकते। बूढ़ी माँ किस तरह वृन्दावन में दर्शन कराने के बहाने छोड़ दी जाती है, यह जानने के लिए वृन्दावन जाकर उनके पास बैठना पड़ेगा और आँखें नम करते हुए उनकी दारुण कथा सुनने को हर तरह से अपने आपको तैयार करना पड़ेगा। आज लाखों गाय लंपी बीमारी के कारण कालकवलित हो रही हैं। इसका क्या कारण समझ में आ रहा है? मेरी समझ में बाजारवाद, उपभोक्तावादी संस्कृति व सेवा की भावना का ह्रास ही सबसे बड़ा कारण है।

फ्लैट व्यवस्था ने कार पार्किंग की जगह तो बनाई पर जो जानवर आपके जीवन का अंग थे उनके लिए क्या? आपने पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करके व उसमें सरकार को भी बराबर अपने साथ लेकर जीवन मूल्य को ही समाप्त कर दिया। जनसंख्या वृद्धि के कारण आप एक बड़े वर्ग का हिस्सा जिस पर आपका कोई अधिकार नहीं था उसे बलात आपने अपना लिया। चारागाह, खुले मैदान, खेत-खलिहान सब कुछ आपकी बढ़ती आबादी ने समाप्त कर दिया। चलिए मान लेते हैं कि आपके अंदर सेवाभाव कूट-कूट कर भरा हुआ है पर मजबूरी में आप गाय पाल नहीं सकते या आप फ्लैट सिस्टम का जीवन व्यतीत कर रहे हैं पर क्या आप किसी गोशाला को नियमित दान कर रहे हैं? नहीं, आप दान करेंगे कैसे! आपका सेवाभाव तो आपकी कार व फिजूल की खर्ची ने निगल लिया। दिखावेपन ने माँ-बाप को वृद्धाश्रम पहुँचा दिया। पूरे समाज व राष्ट्र को बीमारी का घर बना दिया। जो दुधारू जानवर पाल नहीं सकते उनके लिए अपनी कमाई का छोटा सा हिस्सा निकाल नहीं सकते, वही दूध की शुद्धता की वकालत करते दिखाई देते हैं। अरे ! उनको तो संकल्पित होना चाहिए कि "अगर मेरे अंदर का सेवाभाव मृतप्राय हो गया है तो मुझे दूध या दूध से बनी हुई किसी भी वस्तु का सेवन नहीं करना है।"

पूरा वेद और वेदांग तो इन्हीं मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हुए भारत को आतताई बनाने से रोके रखा। यहाँ तक कि जो विदेशी आक्रांता आए उनका स्वागत किया गया भारतीयों के द्वारा। तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय में इन्हीं मूल्यों को समझने व जानने के लिए विदेशी पढ़ने आते थे भारत में, लेकिन गुलामी की जंजीर की कड़ी इतनी बढ़ती गई कि हम अपने मूल्यों की कड़ी से अलग होते गए। ग्रामीण और अनपढ़ या फिर देशभक्तों द्वारा भारतीय संस्कृति व सभ्यता की जो रक्षा हो रही थी उसे 'ढकोसले की साक्षरता अभियान' धीरे-धीरे निगल चुकी है। आज हम उन मूल्यों को बचाने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं। 'आधुनिक प्रमाण-पत्र वितरणकारी' शिक्षा ने भारतीय संस्कृति व सभ्यता और मानवीय मूल्यों पर हल चला दिया है और पीछे से जो कुछ बचा था उसे टीवी व सिनेमा ने हेंगाकर (खेत को समतल बनाना) बराबर कर रहा है। हम, आप खुली आँखों से पड़ोस में वृद्धों की दुर्दशा को देखते रहते हैं और अगर गलती से कुछ टीका-टिप्पणी कर दी तो सामने से बुलावा आएगा कि 'अगर आपके अंदर बड़ा सेवाभाव जागा है तो ले जाइए अपने घर और सेवा करके पुण्य कमाइए।'

खैर धरती वीरों से कभी निपूती नहीं रहेगी। मूल्यों की पुनः स्थापना होगी और भारत का सांस्कृतिक सूर्य के ऊपर घिरी कालिमा का शीघ्र अंत भी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मलयागिरि के मंद पवन के झोके से चलता हुआ और अखण्ड भारत की संकल्पना को साकार करता हुआ वही वैभवशाली आर्यावर्त का निर्माण करेगा जहाँ पर विदेशी आकर जीवन मूल्य का ककहरा पढ़ते थे, जहाँ एक शिक्षक अपने शिष्य को भारत का चन्द्रगुप्त बनाता है और खुद राज प्रासाद का वैभव त्याग कर कुटिया में निवास करता है। हम उस थाती को जीवित करेंगे जो राष्ट्र सेवा के लिए दाधीच बन सके और सम्मान के लिए मर मिटने का संकल्प इतना विशाल हो कि पशु भी राष्ट्र भावना को समझकर चेतक बन सके। संयुक्त परिवार की अवधारणा को पुनः स्थापित करना होगा।

माँ-बाप नौकरी और बेटा मोबाइल पर गेम खेलती 'आया' या फिर 'बच्चे पालन विद्यालय' न तो राष्ट्र को समझ सकता है न ही परिवार को और न ही सेवभाव को। माँ व दादी के मुख से वेद, पुराण,रामायण व महाभारत के साथ वीरों और बलिदानियों की गाथा जिंगल बेल, जिंगल बेल की ध्वनि में कहीं खो चुकी है। सेवा के लिए अपने विलासितापूर्ण जीवन का त्याग करना पड़ता है। हम आशावादी हैं और पुनः इतिहास और भी सुंदर अक्षरों में लिखा जाएगा इसी भावना के साथ...। ■

(लेखक श्री दिगंबर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में हिंदी के सहायक आचार्य हैं)

दान की महिमा

✍ डॉ. शिवाली

कई वर्ष पहले एक राज्य में एक राजा था। एक दिन उसके मन में विचार आया कि यह जानना चाहिए कि इंसान की मृत्यु के बाद उसके साथ क्या होता है और उसको कैसा महसूस होता है। अगले दिन उसने पूरे राज्य में घोषणा करवा दी कि जो भी व्यक्ति यह बताएगा कि मरने के बाद क्या होता है उसको मैं दस हजार स्वर्ण मुद्रा दूंगा। उसी राज्य में एक कंजूस किन्तु अमीर व्यक्ति रहता था। बहुत सारा धन होने के पश्चात् भी वह और अधिक सम्पत्ति कमाने का इच्छुक था। किसी की सहायता करना, दान देना उसको आता ही न था। धन के लोभ में वह राजा के सामने जा पहुंचा। राजा ने कहा कि तुम्हें कब्रिस्तान में मरे हुए व्यक्ति की तरह दफनाएंगे और उसके बाद तुम्हें मुझे बताना होगा कि तुम्हारे साथ क्या हुआ।

कंजूस व्यक्ति को सजी हुई अर्थी पर लेटाया गया और कब्रिस्तान की ओर ले जाने लगे। एक फकीर जो उधर से गुजर रहा था उसने जोर से कहा कि अरे लालची और कंजूस व्यक्ति, तेरे पास इतनी सम्पत्ति है और वैसे भी तू मरने वाला है, मुझे कुछ दान दे देकर जा। ऐसा कहता हुआ वह अर्थी के पीछे-पीछे चलता रहा।

फकीर को चुप करवाने के इरादे से अर्थी से उतरते वक्त उस कंजूस ने हार कर फकीर को कुछ बादाम के छिलके दे दिए। कुछ समय बाद उस व्यक्ति को शर्त के अनुसार कब्र में दफना दिया गया और केवल एक छेद कब्र में किया गया जिससे वो व्यक्ति सांस ले सके। रात में जब वह व्यक्ति उस कब्र में दफन था तभी एक सांप उस कब्र के पास आया और छेद से अंदर झांकने लगा। यही नहीं, छेद से सांप कब्र में घुसने लगा। सांप को इतना करीब देख कर कंजूस व्यक्ति थर-थर कांपने लगा और उसके प्राण पखेरू उड़ने लगे। तभी कब्र के पास एक बादाम का वृक्ष था, उस पर से कुछ बादाम गिर कर छेद पर गिरे और वो छेद बंद हो गया। सांप प्रवेश नहीं कर पाया।

सुबह राजा के सैनिक कंजूस व्यक्ति को कब्र से निकाल कर राजा के महल ले जाने आए, लेकिन वह कंजूस व्यक्ति सबसे पहले अपने घर गया और सारी धन-सम्पत्ति गरीबों में बांटने के बाद राजा के समक्ष प्रस्तुत हुआ। राजा को रात का सारा वृतांत सुनाया और कहा कि राजन वास्तव में दान ही सबसे बड़ा धर्म होता है। दान किए कुछ बादाम के छिलकों ने मेरी जान बचायी। वास्तव में दान ही हमारे काम आता है। अगर मैं इस दुनिया से चला जाता तो इतनी सम्पत्ति-धन-दौलत किसके काम आती। न मैं, न कोई और परिवारजन उपयोग करता या सुखी रह पाता। वास्तव में दान की महिमा ही सबसे बड़ी है और दान से जो सुरक्षा कवच मैंने जीवन में पाया वह सभी पाएं, मैं बस इतना ही चाहता हूँ। ■

(लेखिका दौलतराम कॉलेज (डीयू) में राजनीति शास्त्र की सहायक प्रोफेसर है।)

BDR®
be creative
BDR
Terex
filler
PUBDR
BORDER
SPORTS SHOES
MANUFACTURED BY
SKG Plastics Pvt Ltd
Add : Bahadurgarh, Haryana
Email : skg.plastics35@gmail.com
Mobile : +91 9818533098/99119 77665

Fiesta™

Total Comfort

UFOAM
Technology

Air-Fiesta®

PGS FOOTWEARS PVT. LTD.
NEW DELHI - 110041

Parveen Ji : 9650191713 Rajesh Ji : 9650191712 Love Ji : 9990055115

सेवा कब सम्मान बन जाता है

✍ आचार्य आशुकवि पंकज

सेवा कब सम्मान बन जाता है, एक बार करके जरूर देखिए? चराचर ब्रह्माण्ड में सेवा कार्य इस प्रकार सुनियोजित किया गया है कि हमारे द्वारा जो भी क्रिया होती है वो सेवा का आधार बनती है। जिस प्रकार धर्म के चार स्तंभ हैं उसी प्रकार सेवा के तीन स्तंभ हैं- तन सेवा, मन सेवा, धन सेवा। समाज में सभी के लिए सेवा करना बड़ा ही सहज है। हमारे द्वारा किया गया सभी कृत्य कर्म जिससे एक-दूसरे का कार्य के अवरोधक दृश्य को समाप्त कर उनके कार्य को सम्पन्न कराये। यही जब हमारे श्रम, मेहनत, शारीरिक क्रिया से हो तो तन सेवा है। मन को एकाग्रचित करके मनः शक्ति से संकल्प शक्ति से सकारात्मक ऊर्जा का प्रयोग हो तो मन सेवा है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए भौतिक वस्तु का होना अति आवश्यक है, क्योंकि आज के आंकलन के अनुसार मुद्रा/धन बिना सेवा का कोई आधार नहीं अतः यह धन सेवा है। इन तीनों में आज धन सेवा पर ही अधिक बल दिया जाता है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी प्रकार सेवा के दो पहलू हैं-(1) स्वार्थ भाव (2) निस्वार्थ भाव। स्वार्थ भाव का तात्पर्य है स्वयं के कार्य को सम्पन्न करने के लिए जिससे हमारा कर्तव्य जन्म लेता है ओर हमारे क्रियाकलाप को सम्पन्न करता है। यह स्वार्थ भाव है जो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

निस्वार्थ भाव का तात्पर्य जो कार्य सेवा हमारे हित में न हो दूसरे के कल्याण में हो, दूसरों के हित में जिसमें हमारा कार्य पूर्ण न हो वह निस्वार्थ भाव है। इसे एक मुहावरा के तौर पर कहा जाता है- ''नेकी कर दरिया में डाल।''

वस्तुतः सेवा सम्मान का भूषण है जिससे समाज में आपका, परिवार में आपका, राष्ट्र में आपका एक पहचान और आपको पूर्ण मानव बनाने में आपसे यह क्रिया कराता है। सेवा अनवरत चलने वाली ऐसी प्रतिभा को जन्म देता है जिससे हमारे यश का यशोगान होता है। जो इस प्रकार है- (1) श्री हनुमान जी द्वारा श्रीराम की दास्य-सेवा, (2) स्वामी विवेकानंद जी का विश्व में संस्कृति की राष्ट्र-सेवा, (3) संतों, ऋषि-मुनियों आदि विश्व कल्याण हेतु मानव-सेवा (4) परिवार को चलाने के लिए नौकरी ये स्वयं की सेवा है। (5) पशु, पक्षी वृक्षों द्वारा जो प्रकृति का संतुलन बनाने में योगदान करते हैं वो प्रकृति सेवा है। (6) गरीबों की शिक्षा, वस्त्र, भोजन, हेतु उनकी सहायता नारायण सेवा व समाज सेवा है। ■

गुरु जी का आशीर्वाद

✍ **लक्ष्मण**

प्रभु के आशीर्वाद से मानव जन्म सभी प्रकार से अनमोल श्रेष्ठ है। यदि व्यक्ति अपने पूरे जीवन में कभी भी इस बात को समझ पाए तो जीवन सार्थक हो जाए। लेकिन सच्चा गुरु मिल जाए तो जरूर समझ सकता है। ज्यादातर लोग यूँ ही जन्म लिया खाया-पिया जीवन जिया और प्रभु को प्यारे हो गए। भारत भू पर एक से बढ़कर एक वीर-धीर महापुरुषों का पदार्पण हुआ, जिसे लोग शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर आगे बढ़े और समाज के लिए जिए। ऐसे ही एक महापुरुष माननीय विष्णु कुमार जी (संस्थापक सेवा भारती) और अपने साथियों के विषय में चर्चा करना चाहता हूँ।

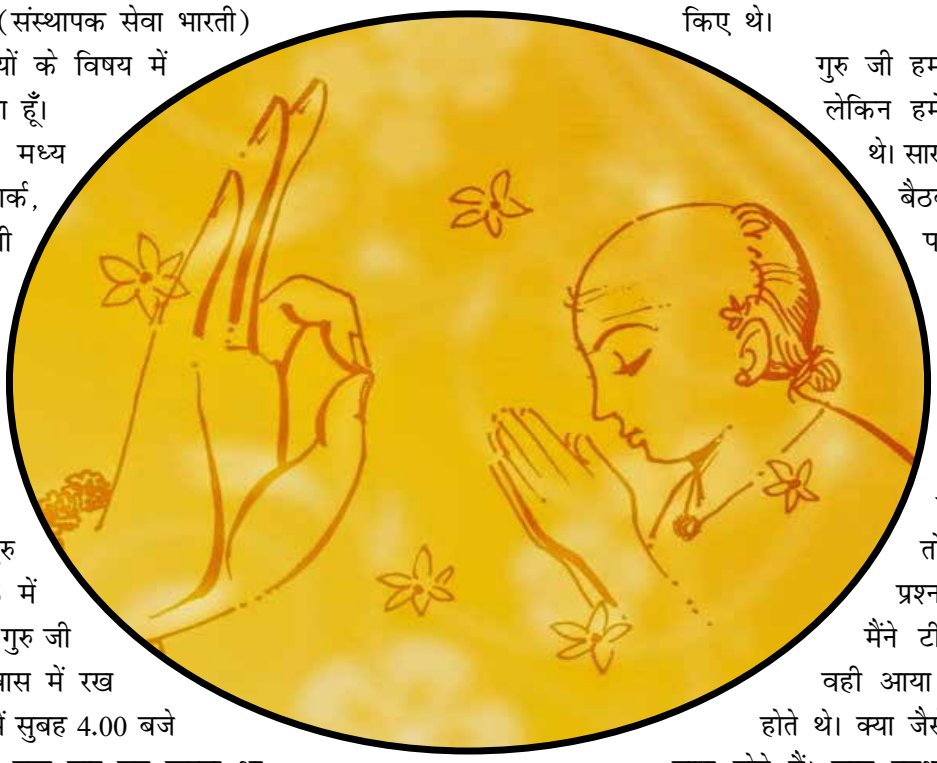

मेरा निवास मध्य दिल्ली में संगम पार्क, कबीर नगर, झुग्गी बस्ती में था। माननीय विष्णु कुमार जी सावन पार्क में सेवा सदन नाम से छात्रावास चलाते थे। मेरा सम्पर्क गुरु जी से वर्ष 1986 में हुआ। सबके साथ गुरु जी ने मुझे भी छात्रावास में रख लिया। छात्रावास में सुबह 4.00 बजे जागरण होता था। एक बार मन करता था भाग जाएं, लेकिन गुरु जी घर से पकड़ कर ले आते थे। सुबह-शाम प्रार्थना, गायत्री मंत्र, सरस्वती वंदना करवाते थे। करीब 80 से 100 छात्र 8वीं से 12वीं तक के थे। हम सभी आस-पास अशोक विहार, एच-ब्लाक, डी ब्लाक सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते थे। और शाम को छात्रावास में योग्य शिक्षक के द्वारा कोचिंग लेते थे।

हम 15-20 छात्र आस-पास के थे जिसमें से ज्यादातर परिवार की माताएं आस-पास कोठियों में काम करती थीं। किसी-किसी के पिता शराब-जुआ आदि में लिप्त थे। ज्यादातर लोग झुग्गी में रहते थे। पढ़ाई के साथ-साथ हम लोग क्षेत्र के झुग्गी बस्ती में सेवा भारती नाम से केंद्र भी चलाते थे। जो कुछ यहां सीखते थे, वहां पर बच्चों को सिखाते थे।

गुरु जी गर्मी के छुट्टी में हम लोगों को दिल्ली और दिल्ली से बाहर दर्शनार्थ ले जाये करते थे। बहुत ही आनन्द आता था अपनी संस्कृति के विषय में जानकर। कई वर्ष कड़ी मेहनत से पढ़ाई से हम लोग 10वीं कक्षा में आ गए। विद्यालय में लोग हमें सेवा भारती वाले के नाम जानते थे। दसवीं बोर्ड में ज्यादातर छात्रों ने बहुत ही अच्छे अंक प्राप्त किए थे।

गुरु जी हमारे थे इंजीनियर, लेकिन हमें इतिहास पढ़ाते थे। सारा दिन बाहर काम, बैठक हम लोगों की परिवार तरह चिन्ता करके देर रात 10 बजे भी आते तो इतिहास जरूर पढ़ाते थे। और जब हम परीक्षा देकर आते थे तो कहते दिखाओ प्रश्नपत्र। अच्छा जो मैंने टीक करवाया था वही आया और बहुत खुश होते थे। क्या जैसे कि माता-पिता खुश होते हैं। सन्त स्वभाव के धनी गुरु जी को याद कर आंखें नम हो जाती हैं। अब बात आगे की करते हैं। दसवीं करने बाद बहुत से बच्चों ने डिप्लोमा में प्रवेश ले लिया। कुछ 12वीं करने के बाद इंजीनियरिंग करने लगे। कुछ अन्य कोर्स में पढ़ने लगे। आज सैकड़ों छात्र सेवा भारती गुरु जी से शिक्षित होकर एक अच्छे पद कर कार्य करते हैं। इसके लिए हम जितना भी धन्यवाद सेवा भारती और गुरु का करें कम है। लेकिन गुरु कहा करते थे, जो आज भी हमें याद है, तुम लोग इस योग्य बन जाओ अपने परिवार के साथ-साथ समाज में जरूरतमंद की सेवा कर सको, यही गुरुदक्षिणा है। ■

सेवा भारती की यशस्वी यात्रा

✍ अंजू पांडेय

भारत के दक्षिण प्रांत में जन्मा बचपन से ही होनहार राष्ट्रभक्त और सेवाभावी बालक, नाम था-विष्णु कुमार। विष्णु जी ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करते ही हिंदुस्तान एयर क्राफ्ट लिमिटेड कंपनी का जॉइनिंग लेटर भी प्राप्त कर लिया। परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा जब इतनी बड़ी कंपनी में नौकरी का अवसर मिला। पर कुदरत को तो कुछ और ही मंजूर था। इसी बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक माननीय बाला साहब देवरस जी से विष्णु जी का परिचय हुआ।

विष्णु जी नित्य प्रतिदिन शाखा जाते। शाखा के बाद प्रवास करते, बाला साहब जी से प्रेरणा पाकर विष्णु जी ने अपनी नौकरी के प्रस्ताव ठुकरा दिया व प्रचारक बनकर सेवा करने का संकल्प लिया, और उनका कार्यक्षेत्र था दिल्ली। विष्णु जी को दिल्ली के राजनीतिक गलियारों की हलचल कभी नहीं भायी। वे हमेशा से ही सेवा के अवसर तलाशते रहते थे। दिल्ली के जहांगीरपुरी का वह क्षेत्र जिसे लोग स्लम कहते हैं, उसे विष्णु जी ने सेवा बस्ती का नाम दिया और जन्म हुआ- 'सेवा भारती' का। सेवा बस्ती में रहने वाले लोगों की दीन-हीन दशा देखकर विष्णु जी का मन अक्सर द्रवित हो जाता था। इसलिए विष्णु जी ने बस्ती में रहने वाले बच्चों के लिए बाल संस्कार केंद्र प्रारंभ किया। इस तरह सेवा भारती की विधिवत स्थापना 2 अक्तूबर, 1979 में जहांगीरपुरी के बाल संस्कार केंद्र से हुई।

नर सेवा नारायण सेवा अर्थात् मानव एवं राष्ट्र कल्याण को सर्वोपरि मानकर सेवा भारती ने कार्य करना प्रारंभ किया। सेवा भारती एक स्वयंसेवी व सामाजिक संस्था है, जहां पर बच्चे के जन्म से लेकर व्यक्ति की अंतिम सांस तक जब, जहां, जैसी भी सेवा की आवश्यकता होती है सेवा भारती व उसके कार्यकर्ता सदैव तत्पर रहते हैं। 'दृष्टिकोण' समाज का विकास समाज के ही द्वारा हो।

'उद्देश्य' समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को मुख्यधारा से जोड़ना। सेवा लेने वाला व्यक्ति सेवा देने वाला सहयोगी बने तथा एक सशक्त समाज का निर्माण हो सके। सेवा भारती का प्रत्येक कार्य समाज के सहयोग से ही चलता है। सहयोगी दानदाता, कार्यकर्ता तथा सेवितजन तीनों कड़ियों का समन्वय ही सेवा भारती का आधार स्तंभ है। समाज के एक वर्ग को दूसरे वर्ग से जोड़ने का कार्य सेवा भारती के कार्यकर्ता सेतु की तरह करते हैं। सेवा भारती चार आयामों में काम करती है- शिक्षा, स्वास्थ, स्वावलंबन और सामाजिक। 'शिक्षा' में बालवाड़ी, जो बच्चे स्कूल नहीं जाते अर्थात 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए यह प्रकल्प चलाया जाता है।

'बाल/बालिका संस्कार केंद्र' इस प्रकल्प के माध्यम से बस्ती के अभावग्रस्त परिवारों के बच्चों को संस्कार तथा शिक्षा दोनों दी जाती है।

'कोचिंग क्लास' जो बालक-बालिकाएं स्कूल जाते हैं पर वे महंगे ट्यूशन नहीं पढ़ सकते ऐसे बच्चों के लिए 'कोचिंग क्लास' चलाई जाती है।

'लाइब्रेरी' सेवा बस्ती में रहने वाले लोगों के घर बहुत ही छोटे होते हैं और पढ़ने के लिए उपयुक्त स्थान तथा किताबें न होने के कारण उनकी शिक्षा में कोई बाध ना आए। इस बात का ध्यान रखते हुए सेवा भारती द्वारा लाइब्रेरी जैसे प्रकल्प चलाए जा रहे हैं।

'गोपालधाम' आतंकवाद से पीड़ित परिवारों के बच्चे कहीं भटक ना जाएं इसलिए सेना ने वे बच्चे सेवा भारती को सौंप दिए। उन बच्चों को सभी उचित सुविधाएं मिल सकें इसकी चिंता गोपालधाम छात्रावास द्वारा की जाती है।

'सेवाधाम' एक आवासीय विद्यालय है जहां पर छठी कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के बच्चे पढ़ते हैं। ये बच्चे

13 अलग-अलग प्रांतों के हैं जैसे- पश्चिम बंगाल, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, असम, मेघालय, झारखंड, उड़ीसा। सेवाधाम में पढ़ने वाले सभी बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों में भी पारंगत किया जाता है। सेवाधाम की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यहां का रिजल्ट 100 प्रतिशत आता है।

'चिकित्सा' के अंतर्गत सेवा बस्तियों में चलने वाली डिस्पेंसरी व मेडिकल मोबाइल वैन के माध्यम से बस्ती में रहने वाले अभावग्रस्त लोगों को अनुभवी डॉक्टरों की उचित सलाह तथा दवाइयां दी जाती हैं। इसके अलावा अशोक विहार व तिलक नगर में डायलिसिस केंद्र, पैथ लैब, रेडियोलॉजी जैसी सभी आधुनिक सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। तथा समय-समय पर स्वास्थ्य जांच शिविर और रक्तदान शिविर भी लगाए जाते हैं। वर्तमान में सेवा भारती द्वारा कुपोषण को दूर भगाने के लिए 1 से 6 वर्ष की आयु तथा गर्भवती महिलाओं के लिए सुपोषित भारत अभियान भी चलाया जा रहा है। जिससे हमारे देश का भविष्य स्वस्थ और सुरक्षित हो सके।

'स्वावलंबन' सड़कों पर कूड़ा बीनने वाले हाथ जब संस्कार सीखने के लिए जुड़ते हैं, तो स्वयं की ही नहीं समाज की भी तस्वीर बदल जाती है। इस प्रकार के बच्चों तथा घुमंतू बालकों के लिए स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रोजेक्ट व बस्ती में रहने वाली महिलाओं के लिए सिलाई, फैशन डिजाइनिंग, कंप्यूटर मेहंदी सौंदर्य-वर्धन व अन्य कोर्स सिखाए जाते हैं, जिससे वे निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बन सकें।

जिन बच्चों को जन्म लेते ही किसी भी कारणवश त्याग दिया जाता है ऐसे अभावग्रस्त बच्चों को 'मातृछाया' में वात्सल्य तथा ममतामई आश्रय मिलता है। जहां से निसंतान दंपत्ति बच्चों को गोद भी ले सकते हैं, दिल्ली में दो मातृछाया चल रही हैं।

'कन्या पूजन' नवरात्रों के शुभ अवसर पर बस्ती में रहने वाली कन्याओं को संपन्न परिवारों में भेज कर भोजन तथा पूजन कराया जाता है।

'भजन मंडली' सेवा बस्ती की बहनों द्वारा समय-समय पर केंद्रों पर हवन, कीर्तन, भजन के कार्यक्रम होते हैं तथा वर्ष में एक बार भजन मंडलियों की प्रतियोगिता भी कराई जाती है। दिल्ली में 200 भजन मंडलियां चल रही हैं। प्रत्येक भजन मंडली में 10 बहनें हैं।

'कुष्ठ आश्रम' कुष्ठ रोगियों की सेवा, मरहम-पट्टी तथा उनके परिवारों की देखभाल आश्रम के माध्यम से की जाती है।

'सामूहिक कन्या विवाह' कोई किसी भी अभाव के कारण जीवन की सबसे खूबसूरत यात्रा अर्थात विवाह संस्कार से वंचित न रह जाए इसलिए सेवा भारती द्वारा सामूहिक कन्या विवाह का आयोजन प्रत्येक वर्ष वसंत पंचमी के दिन किया जाता है।

किशोरावस्था में बच्चियों के अंदर बहुत से परिवर्तन होते हैं जिसके कारण उनके अंदर भटकाव की स्थिति उत्पन्न होती है। उस स्थिति को ध्यान में रखते हुए किशोरियों के बौद्धिक, शारीरिक और मानसिक विकास के हेतु इस प्रकल्प को चलाया जा रहा है। इस प्रकल्प के निमित्त उन्हें अपनी संस्कृति व संस्कारों को किसी कहानी के रूप में बताना, सामाजिक कार्यों में उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए, तथा राष्ट्रहित का ध्यान रखते हुए उनकी नैतिक जिम्मेदारी क्या होनी चाहिए ऐसा मानसिक विकास करने में उनकी सहायता की जाती है।

'अपराजिता' जाने-अनजाने यदि कोई महिला किसी व्यभिचार का शिकार हो जाती है तो उसे सामाज अक्सर हेय दृष्टि से देखता है, उन महिलाओं की बच्चियां उस दलदल में ना फंस जाए इसके लिए सेवा भारती द्वारा छात्रावास चलाया जाता है। अपराजिता छात्रावास के माध्यम से उन बच्चियों की संपूर्ण देखभाल की जाती है।

'प्रसन्ना सलाह केन्द्र' इस केंद्र के द्वारा सामाजिक, पारिवारिक, आपसी मतभेद या फिर किसी भी अन्य विवाद को सलाह के द्वारा सुलझाने का प्रयास किया जाता है वर्तमान में दिल्ली के अंदर दो प्रसन्ना सलाह केंद्र चल रहे हैं।

'गोष्ठियां' महिलाओं को उनके स्वास्थ्य, स्वच्छता, सामाजिक जिम्मेदारी, कुटुंब प्रबोधन, संस्कार तथा समय-समय

पर विभिन्न विषयों पर गोष्ठियों के माध्यम से जागरूक करने का प्रयास किया जाता है।

सेवा भारती पूरे भारत में किसी ना किसी रूप में काम करती है, वर्तमान में 1,70,000 कार्य पूरे देश में चल रहे हैं।

संपूर्ण भारत के किसी भी राज्य में प्राकृतिक या सामाजिक आपदा के समय सेवा भारती का पूरा सहयोग रहता है।

दिल्ली की बात करें तो 305 सेवा बस्तियों में सेवा भारती की सेवाएं पहुंच रही हैं। पूरी दिल्ली में सेवा भारती के 950 से ज्यादा कार्य चल रहे हैं और 1000 से भी अधिक कार्यकर्ता अपनी निस्वार्थ सेवाओं के साथ सेवा भारती से जुड़े हैं।

कहते हैं परिवर्तन प्रकृति का नियम है और सेवा भारती ने भी बदलते समय के साथ साथ अपने सेवा के स्वरूप बदला है। पूर्व में एक पेड़ के नीचे से शुरू हुए बाल संस्कार केंद्र की यात्रा स्मार्ट क्लास तक पहुंच गई है। अब सेवा बस्ती के बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई भी कर पाते हैं। यह सब कुछ सेवा भारती के कार्यकर्ताओं तथा सहयोगी दानदाताओं के अथक प्रयासों से ही संभव हो पाया है।

वर्तमान में जिस विनाशकारी आपदा से समस्त संसार ग्रसित हुआ उसमें भी सेवा भारती पीछे नहीं रही। कोरोना काल में सेवा भारती ने 'हेल्पलाइन' के माध्यम से 1,445 कार्यकर्ताओं द्वारा 30,265 लोगों के फोन कॉल का समाधान किया गया। 'भोजन/राशन किट' 102807 का वितरण। घुमंतू जाति सहायता 4400, विद्यार्थियों की सहायता 3959, बुजुर्गों व दिव्यांगों की सहायता 1445, मास्क वितरण 7,99,207 लोगों को किया गया। 12,70,000 लोगों को आयुर्वेदिक काढ़ा बांटा गया। इसके अलावा मंदिर के पुजारियों की सेवा, पूर्वोत्तर परिवारों की सहायता, प्रवासी मजदूरों की सहायता गौ सेवा, छोटे बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था, पशु पक्षियों के लिए चारा व दाना आहार, साबुन, ग्लब्ज, सैनिटाइजर व अन्य सामान भी वितरित किए। कोरोना की दूसरी लहर में भी सेवा भारती ने 3778 ऑक्सीजन सिलेंडर व 211 कंसंट्रेटर जरूरतमंद लोगों तक पहुंचा कर बहुत से लोगों की जान बचाने में सहयोग किया।

वर्षों पूर्व लगाया गया सेवारूपी एक छोटा सा पौधा आज वटवृक्ष बनकर अनगिनत लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करके लाभान्वित कर रहा है। सेवा का यह कार्य यूं ही निरंतर चलता रहे इसी अपेक्षा के साथ। ■

श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल

हिंदुस्थान के लॉजिस्टिक्स सेक्टर में श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल का जाना-पहचाना नाम है। अपने 47 साल से ज्यादा के अनुभव के आधार पर वे अपनी कंपनी सीजे डार्सल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने का काम तो कर ही रहे हैं, उसी के साथ युवाओं को कौशल विकास और स्वावलंबन के प्रयासों से रोजगार की तरफ भी अग्रसर कर रहे हैं। श्री अग्रवाल अपनी कंपनी के माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन और पशु संरक्षण के क्षेत्र में अविस्मणीय कार्य कर रहे हैं। महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, अग्रोहा में नियमित दान देकर स्वास्थ्य सेवाओं को जनसुलभ बनाने का कार्य श्री अग्रवाल कई वर्षों से करते आ रहे हैं। उसी के साथ महाराजा अग्रसेन मेडिकल एजुकेशन और रिसर्च सोसाइटी के माध्यम से स्वास्थ्य क्षेत्र आधारित शिक्षा में भी योगदान सुनिश्चित कर रहे हैं। सीजे डार्सल अभावग्रस्त एवं अनाथ बच्चों के भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आवास की भी उचित व्यवस्था कर रही है। अपने मोती नगर स्थित आश्रय गृह में कई गरीब, सड़क पर भीख मांगने को मजबूर और माता-पिता से बिछड़े बच्चों को पुलिस की निगरानी में उस आश्रय गृह में रखकर सभी जरूरत की सुविधाएं सुलभता से उपलब्ध करवा रहे हैं। श्री अग्रवाल नियमित रूप से प्रधानमंत्री कोष में दान भी देते हैं।

साल 2014 में स्वावलंबन आधारित योजनाओं के माध्यम से सीजे डार्सल ने श्री अग्रवाल के नेतृत्व में कई युवाओं को ट्रेनिंग देकर नए रोजगारों की प्राप्ति की तरफ अग्रसर किया। श्री अग्रवाल फतेहचंद कॉलेज हिसार के कार्यकारिणी सदस्य होने के साथ पीजीएसडी कॉलेज और सनातन धर्म कॉलेज हिसार के माध्यम से शिक्षा के प्रसार में अग्रसर हैं। श्री अग्रवाल ऑल इंडिया ट्रांसपोर्ट वेलफेयर एसोसिएशन के संरक्षक होने के साथ, एसोचौम जैसी प्रतिष्ठित व्यापारिक संस्था के कार्यकारिणी सदस्य भी हैं। वो पीएचडी चेंबर के संरक्षक सदस्य भी हैं। ■

SKYLARK®
PERFORMANCE IS IN OUR SOLE

COMFORT THAT
TAKES YOU
PLACES

V. JULKA RUBBERS

V.JULKA RUBBERS
Plot No. 87, Sector-16, Footwear Park, Bahadurgarh, HR.
P: +91-9582222573 | E: v.julkarubber.acc@gmail.com | W: www.gulshanfoowear.com
Follow us on

समाज में फैल रही है सेवाधाम की सुगंध

✍ राजेन्द्र नेगी एवं शैलेंद्र विक्रम

सेवा भारती सेवाधाम विद्या मन्दिर की स्थापना का उद्देश्य पूरे भारतवर्ष के उन मेधावियों को कक्षा 6 से 12 तक की शिक्षा प्रदान करना है, जो अत्यंत अभावग्रस्त जीवन-यापन करने पर विवश हैं। इनके घर या तो सुदूर पहाड़ों व जंगलों में हैं या फिर अत्यंत निर्धन जीवन है। यहां से अनेक होनहारों ने शिक्षा प्राप्त करके न केवल अपना जीवन सफल बनाया, बल्कि अपने परिवार, गांव, जिले व प्रदेश के साथ-साथ भारत माता के यशस्वी पुत्र होने की प्रमाणिकता भी सिद्ध की। यहां ऐसे कुछ मेधावियों के बारे में बताया जा रहा है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. रविकांत, डॉ. नवदीप ग्रोवर, डॉ. राजेंद्र मंडल, ताई तुगुंग, डॉ. कुमार केशव, डॉ. राजेंद्र पाहन, श्री वेणुधर शावर, डॉ. हमानी भाग्य जमातिया, श्री तकम सोनिया, श्री शरद कुमार, डॉ. कृष्ण मुरारी, श्री प्रदीप सोलंकी, श्री राजेश कुमार शुक्ला, श्री प्रवीण कुमार, श्री धर्मराज पंवार, श्री जोगेन्द्र गहलयान, श्री राजीव रंजन, राकेश कुमार, श्री सीताराम, श्री गोर्वधन प्रसाद, श्री तुपकुम तानिया, श्री शशि सौरभ भगत, डॉ. रोहित भगत, डॉ. दाताराम, डॉ. राजेश कुमार जैसे सेवाधाम के छात्र समाज जीवन के हर क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

वेणुधर शावर

उड़ीसा के सुदूर आदिवासी जिला गजपति के निवासी वेणुधर शावर सेवाधाम में वर्ष 1994-2001 के छात्र रहे। कक्षा छठी में अत्यंत कमजोर शैक्षिक सत्र के उपरांत शनैः-शनैः इनका सर्वांगीण विकास होता गया। छात्रावास जीवन में अत्यधिक मितव्ययिता का पालन किया। उड़ीसा से स्नातक होने के पश्चात् इस मेधावी छात्र ने उड़ीसा प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्तमान में खण्ड विकास अधिकारी के पद पर कार्य कर रहे हैं। सेवा भारती के विद्यालय के सेवा संस्कार के कारण वे अपने प्रांत के सफलतम प्रभावी अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं।

ताकम सोनिया

अरुणाचल प्रदेश के पालिन से सेवाधाम में आये छात्र ताकम सोनिया (वर्ष 2000-2007) ने अहिन्दी भाषी होते हुए सेवाधाम से अपनी शिक्षा ग्रहण करने के बाद हिन्दी में स्नातकोत्तर की उपाधि ली। नार्थ ईस्ट क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिंदी को संम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य निश्चित कर इस दिशा में अनेक अन्य पूर्व छात्रों को साथ लेकर उल्लेखनीय कार्य किये। एक संस्था अरुणाचल हिंदी संस्थान की स्थापना कर अनेक गतिविधियां कर रहे हैं। ईटानगर से प्रकाशित पहला हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अरुणोदय आरम्भ किया। एक आनलाइन समाचार चैनल भी स्थापित किया है। इनके इस कार्य की सम्पूर्ण अरुणाचल प्रदेश में चर्चा है।

ताई तुगुंग

अरुणाचल प्रदेश से आए ताई तुगुंग सेवाधाम के वर्ष 1996 से 2003 सत्र के छात्र रहे। हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से लेने के उपरांत अरुणाचल प्रदेश में विश्वविद्यालय में हिन्दी के असिस्टेंट प्रोफेसर बने। सेवाधाम विद्यालय में छात्र जीवन में अर्जित अपने अभिनय कौशल को निरंतर विकसित किया तथा अपने प्रदेश के प्रतिष्ठित रंगकर्मी बने। हिंदी भाषा में अनेक फिल्में एवं वीडियो बनाए जिसमें हिंदी फिल्म अरुणाचल जीरो किलोमीटर खूब पसंद की गई।

संवारा सेवाधम ने

मैं विनोद कुमार पुत्र श्री कपूर सिंह निवासी टोहाना, फतेहाबाद, हरियाणा से हूँ। मैं सेवा भारती द्वारा गरीब वंचित छात्रों के लिए संचालित सेवाधाम विद्यामन्दिर से लाभन्वित छात्र हूँ। वर्ष 1997 से 2004 तक सेवाधाम विद्यामन्दिर से शिक्षा प्राप्त की और आगे की शिक्षा मैंने अपने गृह क्षेत्र से ग्रहण की। मेरा परिवार अनुसूचित जाति एवं शिक्षा से वंचित परिवार था। मेरे पिता जी दिहाड़ीदार मजदूर थे, हम तीन भाई-बहनों की शिक्षा का प्रबंध कर पाना बहुत ही मुश्किल था। जब मैं पांचवीं कक्षा का छात्र था तो आदर्श हाई स्कूल से शिक्षा प्राप्त करते हुए वहां पर कार्यरत शिक्षक श्री श्रीधर शर्मा जी ने मुझे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जोड़ा और सेवा भारती द्वारा संचालित विद्यालय के बारे में अवगत करवाया और वर्ष 1997 में सेवाधाम विद्यामन्दिर द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं उस प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। फिर मेरी 12वीं तक की पढ़ाई सेवाधाम में निःशुल्क हुई। यहां से प्राप्त संस्कारों को मैंने जीवन में धारण किया। स्नातक की शिक्षा पूरी करने के बाद मैं सरकारी नौकरी में लग गया। वर्तमान में मैं हरियाणा राज्य परिवहन में यातायात प्रबंधक के पद पर कार्य कर रहा हूं। सेवाधाम में रहकर एक सपना संयोजा था कि वंचित एवं ग्रामीण आंचल में रह रहे गरीब परिवारों की मदद की जाए। उसी संस्कार को जीवन का मंत्र बनाकर जो भी संभव होता है, सेवा कार्य करता रहता हूं।

टंकेश्वर महतो

वनवासी कल्याण आश्रम के छात्रावास में प्रारंभिक शिक्षा लेकर 1995 में सेवाधाम में कक्षा 6में प्रवेश लेकर 2003 में कक्षा 12वीं परीक्षा पास की। उसके उपरांत सेवाधाम में ही रहकर दिल्ली स्थित जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से बी एफ ए की परीक्षा स्वर्ण पदक लेकर उत्तीर्ण की। बाद में एम एफ ए करके छात्रावास में छात्रों का मार्गदर्शन का कार्य किया। वर्तमान में ये नवोदय विद्यालय में कला अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं।

श्री राजेन्द्र मंडल

प्रथम बैंच 1988-95 ओडिशा प्रान्त से हुए हुए छात्र। सेवाधाम से अध्ययन समापन के पश्चात् मेडिकल कॉलेज, बेरहमपुर से एमबीबीएस की डिग्री ली। फिर 2005 में ओडिशा सरकार में डॉक्टर के रूप में रायगढ़ जिले के सुदूर आदिवासी ग्रामीण क्षेत्र में कार्यभार संभाला। जहां अधिकांश डाक्टर ऐसे सुदूर क्षेत्रों में जाने से बचते हैं। श्री राजेन्द्र जी ग्रामीण ों की सेवा को ही अपना कर्तव्य समझकर अदभुत कार्य कर रहे हैं।

श्री प्रदीप सोलंकी

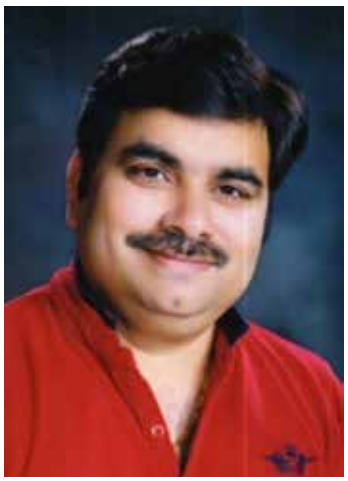

दूसरे बैच 1990-97 दिल्ली प्रांत से आए हुए छात्र। सेवाधाम से अध्ययन के पश्चात् अपने अथक परिश्रम से एक सफल उद्यमी हैं। व्यवसाय के साथ-साथ समाज सेवा में भी बढ़-चढ़ कर योगदान करते हैं। दिल्ली सेवा भारती एवं सेवाधाम में प्रबन्धन टोली के सदस्य रह चुके हैं। इसके साथ ही बजीराबाद छात्रावास में संरक्षक के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

श्री विमल कुमार

तीसरे बैच 1990-97 दिल्ली प्रांत के छात्र। सेवाधाम से अध्ययन के पश्चात् दिल्ली विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। 2015 से अपने ही विद्यालय

सेवाधाम में रसायन विज्ञान के शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। साथ ही पुरातन छात्र परिषद को एकसूत्र में बांधकर रखने वाले कर्मठ कार्यकर्ता हैं। बजीराबाद छात्रावास में एक कुशल संचालक की भूमिका में छात्रों के प्रत्येक सुख-दु:ख एवमं आवश्यकता में सदैव उनके सहयोग में तत्पर रहते हैं।

श्री धर्मराज पंवार

सन् 1998-2005 बैच के दिल्ली के छात्र। सेवाधाम से अपने अध्ययन की समाप्ति के पश्चात् कम्प्यूटर इन्जीनियरिंग की पढ़ाई की। समाज सेवा में सदैव अग्रण ी रहने वाले धर्मराज जी अभावग्रस्त बच्चों को रोबोटिक्स की शिक्षा देने का पावन कार्य कर रहे हैं। इन्हीं के प्रयास एवं समाज के सहयोग से सेवाधाम में भी रोबोटिक्स लैब (कलाम ड्रीम लैब) की स्थापना संभव हो पाई।

श्री शरद कुमार

1997-2004 बैच के छात्र रहे शरद कुमार हल्द्वानी उत्तराखंड से हैं। विषम पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इन्हें सेवाधाम में अध्ययन हेतु भेजा गया। छात्रावास की दिनचर्या और जीवन-पद्धति ने इनके जीवन का लक्ष्य निश्चित कर दिया। विद्यालय में संघ के कार्यक्रम में घोष विषय में तज्ञता प्राप्त की। अपनी शिक्षा पूरी कर शरद जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक बने। विगत 15 वर्ष से निरंतर अनेक क्षेत्रों में अनेक दायित्व के साथ वर्तमान में आप उत्तराखंड में विभाग प्रचारक के दायित्व पर रहते हुए भारत माता की सेवा में रत हैं। ■

KARTIKEY GANESH FOODS PVT. LTD.

ARVIND KUMAR SHARAD KUMAR

16, COMUNITY CENTRE LAWRANCE ROAD, DELHI-110035

DREAM BIG,
CHOOSE
A-CLASS
MARBLE
KISHANGARH (RAJ.) | NEW DELHI | AHMEDABAD
: www.aclassmarble.co.in
+91 99998 00071
: aclassmarble

टाटा समूह के सेवा कार्य

✍ डॉ. शिवम् शर्मा

टाटा समूह एक निजी व्यावसायिक समूह है जिसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है। वर्तमान में इसके अध्यक्ष रतन टाटा हैं। रतन टाटा पिछले 50 साल से टाटा समूह से जुड़े हैं। रतन टाटा ने आर. डी. टाटा के बाद 1991 में कार्यभार संभाला। टाटा परिवार का एक सदस्य ही हमेशा टाटा समूह का अध्यक्ष रहा है। इसका कार्यक्षेत्र अनेक व्यवसायों व व्यवसाय से सम्बंधित सेवाओं के क्षेत्र में फैला हुआ है- जैसे अभियांत्रिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, संचार, वाहन, रासायनिक उद्योग, ऊर्जा सॉफ्टवेयर होटल, इस्पात एवं उपभोक्ता सामग्री।

टाटा समूह का उद्देश्य समझदारी, जिम्मेदारी, एकता और बेहतरीन काम से समाज में जीवन के स्तर को ऊँचा उठाना है। टाटा समूह (टाटा ग्रुप) के नाम से सुविख्यात इस परिवार का हर सदस्य इन मूल्यों का अनुसरण करता है। भारत की शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में टाटा का योगदान अति महत्वपूर्ण है। टाटा का नीले रंग का चिन्ह (लोगो) निरंतर प्रवाह की ओर इशारा करता ही है। यह कल्पतरु या बोधि वृक्ष का भी प्रतीक है। इसे एक ऐसा वृक्ष भी माना जा सकता है जिसके नीचे हर कोई शरण पा सकता है, सकून पा सकता है।

टाटा के सामजिक कार्यों का इतिहास काफी पुराना है। जिस तरह भामाशाह ने महाराणा प्रताप को संसाधन प्रदान करने के लिए अपने खजाने को खोल दिया था। ठीक उसी तरह टाटा समूह ने देश के विकास में अपने समस्त संसाधनों को समर्पित कर दिया। टाटा परिवार ने स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही सामाजिक और परोपकारी कार्यों में खास रुचि दिखाई। टाटा ने दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के नस्लवाद विरोधी आंदोलन को नैतिक और आर्थिक मदद की थी। उस समय उन्होंने इसके लिए 1.25 लाख रुपये का दान किया। वे स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक गोपाल कृष्ण गोखले के दोस्त थे। उन्होंने गोखले के सामाजिक कार्यों में मदद के लिए 10 साल तक सालाना 10,000 रुपये की मदद की। इतना ही नहीं, उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (एलएसई) में गरीबी पर अध्ययन के लिए एक चेयर की स्थापना के लिए सालाना 400 पाउंड की मदद की। अब यह चेयर सर रतन टाटा फाउंडेशन के रूप में स्थापित है। वर्ष 1912 में सर रतन की मदद से ही एलएसई में 'समाज अध्ययन विभाग' की स्थापना हुई। उन्होंने 1913 से 1917 के बीच पाटलिपुत्र (पटना) में पहले पुरातात्विक खुदाई के लिए सहायता की। इस खुदाई में ही 100 स्तंभों वाला मौर्यकालीन दरबार मिला।

उनके सहयोग से ही वर्ष 1905 में मैसूर में 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंटिफिक एंड मेडिकल रिसर्च' की स्थापना की गयी।

उन्होंने बाम्बे नगर निगम द्वारा शुरू किये गये किंग जॉर्ज पंचम एंटी ट्यूबरकुलोसिस लीग के लिए दस साल तक सालाना 10 हजार रुपये का दान दिया। उनकी समाज सेवा को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने 1916 में उन्हें नाइटहुड यानी सर की उपाधि भी दी।

भारतीय जनता पार्टी की सरकार के गठन के बाद टाटा समूह के वर्त्तमान अध्यक्ष रतन टाटा भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी से मिलने गए। उसके बाद दिसंबर, 2016 में रतन टाटा नागपुर में सरसंघचालक माननीय मोहनराव भागवत जी से भी मिले। 28 दिसंबर को दोपहर में नागपुर पहुंचे, जहाँ पहले वे रेशिमबाग स्थित डॉक्टर हेडगेवार स्मृति मंदिर गए। वहां दर्शन के बाद वे संघ मुख्यालय पहुंचे थे। मोहन भागवत जी से मिलकर रतन टाटा ने संघ के सेवा कार्यों से जुड़ने की इच्छा जाहिर की थी। इस संपर्क के बाद खास आदिवासी क्षेत्र के काम और राष्ट्र निर्माण के लिए टाटा समूह की भागीदारी चाहते थे। समाज में टाटा समूह भी कई सेवा कार्यों से विशेषकर अपने 'कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सबिलिटी' के माध्यम से जुड़ा है।

टाटा समूह का 'परोपकार टाटा ट्रस्ट' में उनके नेतृत्व में किया गया है। यह ट्रस्ट भारत में बाल कुपोषण को कम करने, मातृ स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने और गरीबी को कम करने के उद्देश्य से काम कर रहा है। साथ ही उनके कार्यक्रमों में एक दिन में 60,000 भोजन प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया था।

टाटा समूह के सदस्य भी विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं को निधि देते हैं। उदाहरण के लिए टाटास्काच और टीसीएस परियोजना। उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स और टाटा मेमोरियल हास्पिटल के रूप में ऐसे पोषित संस्थानों की स्थापना की और अभी भी संरक्षण दे रहे हैं। प्रत्येक टाटा समूह की कंपनी अपने ऑपरेटिंग आय से 4 प्रतिशत से ज्यादा ट्रस्टों को चैनल देती है, और टाटा परिवार की हर पीढ़ी ने अपने लाभ का बड़ा हिस्सा इसके लिए छोड़ दिया है।

मुंबई के आतंकवादी हमले के बाद पुनर्निर्माण के लिए होटल बंद होने के बावजूद ताज होटल कर्मचारियों के वेतन का भुगतान किया गया। लगभग 1600 कर्मचारियों को कर्मचारी, आउटरीच केन्द्रों के माध्यम से भोजन, पानी, स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गई। रतन टाटा ने व्यक्तिगत रूप से प्रभावित सभी कर्मचारियों के परिवारों का दौरा किया। कर्मचारियों के रिश्तेदारों को बाहर के क्षेत्रों से मुंबई भेजा गया था और सभी को तीन हफ्तों तक ठहरने और खाने की व्यवस्था की गई थी। टाटा ने रेलवे कर्मचारियों, पुलिस कर्मचारी और पैदल चलने वालों के लिए मुआवजा भी शामिल किया। हमले के बाद बाजार विक्रेताओं और दुकान के मालिकों की भी देखभाल और सहायता दी गई थी। टाटा समूह द्वारा सोशल साइंस इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर एक मनोचिकित्सीय संस्था की स्थापना की गई थी, जो उन लोगों से परामर्श करने की जरूरत थी जो मददगार थे और मदद की जरूरत थी। टाटा ने आतंकवादी हमले के पीड़ितों के 46 बच्चों को शिक्षा भी दी।

वर्ष 2013 में टाटा रिलीफ कमेटी और सर रतन टाटा ट्रस्ट के सहयोगी संगठन, हिमोलोटन सोसायटी के माध्यम से राज्य के तीन जिलों में प्रभावित स्थानीय समुदायों को राहत देने के लिए, उत्तराखंड सरकार के करीबी सहयोग में काम किया। राहत गतिविधियों, जिसमें भोजन और घरेलू सामग्री का प्रावधान शामिल था। 65 से अधिक गांवों और 3000 परिवारों को शामिल किया गया था। राहत के पहले चरण में समूह 100 से अधिक गांवों तक पहुंचा। टाटा समूह ने प्रभावित समुदायों और क्षेत्रों के आर्थिक, पारिस्थितिकी और संसाधनों की स्थिरता के लिए दीर्घकालिक उपायों को भी लागू करने की योजना बनाई। यह योजना टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस), मुंबई में स्थित स्थानीय संगठनों और समुदायों के सहयोग से प्रभावित क्षेत्रों के सर्वेक्षण पर आधारित थी।

टाटा समूह ने बोस्टन, मैसाचुसेट्स में संस्थान के परिसर में शैक्षिक और आवासीय भवन बनाने के लिए 2.360 बिलियन 15 करोड़ डॉलर का दान किया। हार्वर्ड स्कूल (एबीएस) की नई इमारत को टाटा हॉल कहा जाता है और इसका उपयोग संस्थान के शिक्षा कार्यक्रम के लिए किया जाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में कारोबार करने वाले टाटा समूह ने 'सर्वे भवन्ति सुखिनः' की भारतीय परंपरा को पुष्ट करते हुए विभिन्न देशों में किये गये सामाजिक एवं परोपकारी कार्यों की एक रिपोर्ट 'वी ड्रीम ऑफ अ बेटर वर्ल्डः हमारा सपना सुखद पेश' करने की घोषणा की है। कंपनी ने जारी बयान में बताया कि इस रिपोर्ट में विश्व के विभिन्न हिस्सों में किये गये 65 योगदानों की विस्तृत जानकारी होगी। इसमें कारोबार, कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व सीएसआर और परोपकार में समूह के योगदान की जानकारी होगी। इसके साथ ही 193 देशों में समावेशी विकास के लिए प्रतिबद्ध 17 लक्ष्यों से जुड़ी जानकारियां भी होंगीं। ये लक्ष्य सितंबर, 2015 में तय किये गये थे।

रतन टाटा को 24 फरवरी को मुंबई में वार्षिक सीएसआर शाइनिंग स्टार अवाड्र्स में वॉकहार्ट फाउंडेशन द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। वॉकहार्ट फाउंडेशन द्वारा यह वार्षिक पुरस्कार स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाओं के उत्थान, कौशल विकास और पशु कल्याण जैसी श्रेणियों में कंपनियों के सीएसआर प्रयासों के लिए दिया जाता है। ■

(लेखक जेएनयू में अनुवाद अधिकारी हैं)

FROM-
Gulshan®
Family Footwear
AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY
GLOSTAR
Future At Your Steps...
Meet Our New
Collection
GLOSTAR
Crystal-109
Diva-302
Atom-02
Charlie-040
Pikachu
V JULKA FOOTWEAR
901-902-903, M.I.E. Part-I, Bahadurgarh, Haryana | E-mail: vjulkarubbers@gmail.com

GOAL IMPEX PVT LTD

Mundka Delhi 9710855008

Mr. BEAN

VOK STAR®

Ready for Comfort

सिद्धि-सेवा की पर्याय

✍ **प्रतिनिधि**

डॉ. मीना महाजन एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु हैं, जिन्होंने वैश्विक पटल पर भारत के आध्यात्मिक चिंतन का प्रचार-प्रसार किया है। आपने जन साधारण को आध्यात्मिकता से जोड़ा एवं उसे व्यवहारिकता में उपयोगी बनाया है। आपने लाखों लोगों और सहस्त्रों युवाओं को सनातन धर्म के मार्ग पर प्रशस्त किया है और उनके जीवन में आध्यात्मिकता को आधार बनाया है। निश्चित ही डॉ महाजन धर्म की द्योतक हैं। इसी कारण सहस्त्रों युवा इन्हें ज्योति स्वरूप मानकर गुरु माँ कहकर सम्बोधित करते हैं।

आप महादेव की अनन्य साधक हैं। आप लगभग दो दशक से आध्यात्मिकता के क्षेत्र पर कार्यरत हैं। आप वेद और उपनिषद की प्रकांड ज्ञाता हैं। आपने वेद और उपननिषद का सुलभ, सरल अनुवाद कर उसे जनमानस के लिए सहज ज्ञान प्रणाली में रूपांतरित किया है। यही कारण है कि आज युवा आध्यात्मिकता से भागता नहीं, अपितु उसे जीवन में अपना रहा है। गुरु माँ ने अपने उद्यम से असंख्य लोगों को सेवा से जोड़ा है और उन्हें सेवा परमो धर्म के पद की ओर अग्रसर किया है।

आपने 'सिद्धि' जैसे आध्यात्मिक संगठन का निर्माण किया और देश भर के युवाओं को इसमें सम्मिलित किया। उन्हें निष्काम भाव से मानवता की सेवा के प्रति उनमुख किया है। 'सिद्धि' का ध्येय सेवा परमो धर्म, निष्काम सेवा और मानवता का उत्थान है। यही कारण है की आज 25000 स्वयंसेवक 'सिद्धि' के साथ हैं और सम्पूर्ण भारत में सनातन धर्म के प्रवाहक बने हैं। 'सिद्धि' ने अपनी विविध परियोजनाओं से प्रयास किया है कि समाज का वंचित वर्ग भी मुख्यधारा में सम्मिलित हो। हमारी समस्त परियोजनाओं का संचालन गुरु माँ के आध्यात्मिक नेतृत्व में 'सिद्धि' के स्वयंसेवक कर रहे हैं। इन परियोजनाओ के माध्यम से लोगों को भौतिक सुख सुविधाएं उपलब्ध करवाना, शिक्षा, स्वास्थ्य की जानकारी देना और उनके जीवन में सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करवाना हमारा उद्देश्य है। 'सिद्धि' की प्राथमिकता है कि निम्न योजनाओं के माध्यम से जन साधारण में सनातन धर्म का मूलभाव भी पहुँचे-

गुरुकुल

गुरु माँ के नेतृत्व में 'सिद्धि' ने बोसंघीपुर दिल्ली, बंगाल के सिलीगुड़ी के चाय बागानो में और आकांक्षी जिले चंदौली (जिसमें 25 गांव को सम्मिलित किया है) में गुरुकुल का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन हो रहा है। गुरुकुल में वंचित वर्ग के किशोर एवं किशोरियों को गुरु माँ द्वारा रचित पाठ्यक्रम को पढ़ाया जाता है। बच्चों को त्योहार, कला, कहानियों के माध्यम से संस्कारों का रोपण किया जाता है और देश के प्रति अपना कर्तव्य, भक्ति का संचार किया जाता है। यह बहुत

हर्ष का विषय है कि आज दिल्ली गुरुकुल में लगभग 100, सिलीगुड़ी में 50 और चंदौली में 75 छात्र-छात्राएं हैं।

होप फूड कार्ट

होप अर्थात हेल्प अदर पीपल टू ईट, एक रचनात्मक योजना जिसके माध्यम से असहाय एवं जरूरतमंद जनों को पाँच रुपए पर प्लेट में भर पेट भोजन एवं एक फल उपलब्ध करवाया जा रहा है। होप फूड कार्ट के सौजन्य से लोगों को पौष्टिक स्वादिष्ट मौसमी भोजन तो उपलब्ध होता ही है, साथ ही उनका देश की खाद्य संस्कृति की विविधता से भी परिचय होता है। 'होप फूड कार्ट्स' के माध्यम से 'सिद्धि' ने तकरीबन 5 लाख परिवारों को अपनी सुविधाएं उपलब्ध करवाई, 5 लाख राशन सामग्री वितरित की। 3 लाख स्वच्छता पेड्स प्रदान किये और लगभग एक अरब परिवारों के मध्य जागरूकता फैलाई।

मिशन शक्ति

इसके अंतर्गत 'सिद्धि' के स्वयंसेवक सम्पूर्ण भारत में महिला सुरक्षा और स्वास्थय के संबंध में जागरूकता फैला रहे है। 'सिद्धि' हर मास 2500 महिलाओं को स्वच्छता पैड्स उपलब्ध करवाती है। 'सिद्धि' महिलाओं और किशोरियों के लिए एक मंच है जहाँ वे अपनी स्वास्थ्य संबंधी जिज्ञासाएं और समस्याओं के बारे में चर्चा कर सकती हैं। 'सिद्धि' समय-समय पर महिला और किशोरियों के लिए हेल्थ कैंप का आयोजन करती रहती है और उनसे निरंतर संवाद कर उन्हें स्वावलंबी बनने की प्रेरणा देती है।

निसंदेह 'सिद्धि' की प्रेरणास्रोत सेवा भारती है, जिसने 'सिद्धि' को मार्गदर्शन प्रदान किया है। आज सेवा भारती के माध्यम से 'सिद्धि' कई सेवा बस्तियों में विकास कार्य कर रही है। 'सिद्धि' ने मातृछाया में भी अपनी क्षमता अनुसार योगदान दिया है। 'सिद्धि' ने सेवा भारती से प्रेरणा लेकर घुमंतू समाज जैसे गाडिया लुहार आदि की समय-समय पर सहायता की है। हमने गुरुग्राम में विस्तृत भूमि पर सैकड़ों पौधों का वृक्षारोपण भी किया है और स्कूल के बच्चों को पर्यावरण की प्रधानता से अवगत करवाया है। आज 'सिद्धि' सेवा भारती के सहयोग से एक विशाल वृक्ष के रूप में धर्म का प्रचार प्रसार कर रही है और 'सिद्धि' का ध्येय है कि भारत एक विश्व गुरु बनकर कोने-कोने में अपनी इस विशाल संस्कृति को स्थापित करे। ■

गौरवशाली अवसर

अत्यंत खुशी का अवसर है कि सेवा भारती दिल्ली, "सेवा सम्मान-2022" कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है। यह गौरवशाली अवसर है जब सामाजिक विकास, स्वावलंबन, शिक्षा एवं राष्ट्र उत्थान के प्रयासों में लगी समाज की सेवा विभूतियों को उनके महान कार्यों के लिए सम्मानित किया जा रहा है। अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स लिमिटेड (ए.पी.एम.एल) भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के प्रयासों में कार्यरत है। उसके साथ सभी लोग बिना किसी भेदभाव के समान अधिकारों एवं अवसरों के साथ अपना जीवन जी सकें, उसके लिए कार्य कर रहा है। ए.पी.एम.एल अपने 'निंद्रा दान केंद्र' के माध्यम से सभी ड्राइवर साथियों को पूरे सम्मान के साथ बेफिक्र नींद, उनके सामान और ट्रक की सुरक्षा, नाई और नहाने धोने की सुविधा नि:शुल्क एवं बहुत कम शुल्क में भोजन की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। इस प्रकल्प की वजह से ड्राइवरों को पर्याप्त नींद मिलती है, जिससे सड़क दुर्घटनाओं में कमी आ रही है और सैकड़ों जीवन बच रहे हैं। हम इस महान कार्य की सफलता की कामना करते हैं और विश्वास करते हैं कि ये प्रयास निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। सेवा भारती और सभी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं।

-जे.एस. अहलूवालिया
ग्रुप अध्यक्ष, अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स लिमिटेड

अद्‌भुत प्रयास

सेवा भारती दिल्ली 44 वर्ष से प्राणीमात्र के उत्थान के प्रयासों में अनवरत लगी हुई है। उस कड़ी में समाज में महान सेवा कार्य कर रहे सेवा विभूतियों को सम्मानित करने का यह प्रयास अविस्मरणीय है। इसके लिए सेवा भारती की प्रशंसा करते हैं, उसी के साथ कार्यक्रम की सफलता की कामना करते हैं।

-बलवंत कुमार
जिला संघचालक

कुछ सेवाभावी उद्योगपति

श्री मन्नालाल अग्रवाल

अजंता फार्मा भारत में विशेष उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला के उत्पादन में लगी हुई है। भारत में यह कंपनी नेत्र

विज्ञान, दर्द प्रबंधन, त्वचा विज्ञान और कार्डियोलॉजी जैसे क्षेत्रों में काम करती है। आपके कुशल प्रबंधन और दूरदर्शिता ने विश्व स्तर पर आपको एक मजबूत उद्यमी व समाजसेवी के रूप में स्थापित किया है। वर्तमान में अजंता फार्मा के चेयरमैन श्री मन्नालाल अग्रवाल जी ने 1973 में अजंता फार्मा के सह-संस्थापक के रूप में कार्य आरंभ किया। श्री अग्रवाल जी को आज विश्व स्तरीय उद्यमी के रूप में ख्याति प्राप्त है। आप टैक्सेशन और अकाउंट्स के क्षेत्र में 40 से अधिक वर्षों का अनुभव रखते हैं। आप की यूएसपी मुख्य रूप से नवाचार और अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग है। समाज सेवा के क्षेत्र में भी आपकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। समता फाउंडेशन के माध्यम से सैकड़ों गरीब और जरूरतमंद लोगों का सामूहिक विवाह का आयोजन करते हैं।

श्रीमती रोहिणी नीलेकणी

श्रीमती रोहिणी नीलेकणी एक प्रसिद्ध लेखिका के रूप में जानी जाती हैं, जिन्होंने अर्घ्यम फाउंडेशन की स्थापना की, जो पानी और स्वच्छता के मुद्दों पर कार्य करती है। आप अक्षरा फाउंडेशन की भी अध्यक्षा हैं, जो प्रारंभिक शिक्षा पर कार्य करती है। आपने एलफिंस्टन कॉलेज मुंबई से फ्रेंच साहित्य में डिग्री हासिल की और पढ़ाई पूरी करने के बाद 1980 में बॉम्बे पत्रिका के साथ एक पत्रकार के रूप में कार्य किया और बाद में संडे पत्रिका बेंगलुरु में भी काम किया। 1989

में अपना पहला उपन्यास प्रकाशित किया जिसे पाठकों ने खूब सराहा। 2004 में बच्चों की कहानियां श्रृंगेरी सीरीज प्रकाशित की। 2011 में दूसरी किताब अन कॉमन ग्राउंड प्रकाशित की। आप अशोका ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट के बोर्ड में हैं जो पर्यावरण संरक्षण पर काम करती है। जुलाई 2011 में आपको भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के ऑडिट सलाहकार बोर्ड के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया। मई 2012 में आप प्रतिस्पर्धा आयोग की सलाहकार समूह में आईं। आप 2017 में कला और विज्ञान की अमेरिका अकादमी में विदेशी सदस्य के रूप में सम्मानित की गईं। आप एक महान समाजसेविका के रूप में भी जानी जाती हैं और परोपकार के क्षेत्र में आपका महान कार्य देश-विदेश में चर्चित है। 2013 में आपने और आपके पति नंदन नीलकेनी जी ने नेशनल काउंसिल ऑफ अप्लाइड इकोनामिक रिसर्च को 50 करोड़ रु. का दान दिया। 2013 में परोपकारी कार्यों के लिए 164 करोड रुपए जुटाने के लिए कार्य किया। मार्च 2022 में फोर्ब्स पत्रिका द्वारा एशिया के सर्वश्रेष्ठ परोपकारी का पुरस्कार दिया गया।

श्री राहुल गौतम

श्री राहुल गौतम जी ने 1975 में आईआईटी कानपुर से केमिकल इंजीनियरिंग में बीटेक प्राप्त किया। इसके बाद इन्होंने पॉलिटिकल इंस्टिट्यूट ऑफ न्यूयॉर्क, यूएसए से उसी विषय में

मास्टर डिग्री प्राप्त की। न्यूयॉर्क जाने से पहले शीला फोम के संस्थापक सदस्य थे, जिसकी स्थापना उन्होंने 1971 में अपनी मां शीला गौतम जी के साथ मिलकर की थी। मास्टर डिग्री के बाद आप जैसे ही भारत लौटे कंपनी के संचालन में खुद को पूरी तरह से डुबो दिया। आपकी उद्यमशीलता के उत्साह और उत्कृष्टता का सम्मान करते हुए आईआईटी कानपुर ने आपको प्रतिष्ठित पूर्व छात्र पुरस्कार 2017 से सम्मानित किया। राहुल गौतम जी के तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ धैर्य दृढ़ता और दृढ संकल्प के बल पर शीला फोम कंपनी को उन्होंने एक सक्षम नेतृत्व दिया जिसकी बदौलत यह कंपनी घरेलू उत्पादों और फॉर्म उद्योग में विशेष स्थान रखती है। आप कंपनी में मुख्य रूप से वित्त विभाग, संयुक्त उद्यम और अधिग्रहण को संभालते हैं। आप पॉलीयूरेथीन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष हैं और आपने पहले पॉलीयूरेथीन शिखर सम्मेलन 2005 और फिर मार्च 2008 में आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका

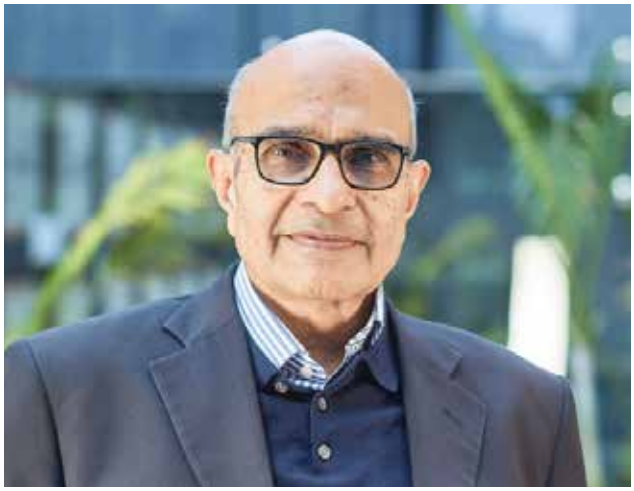

निभाई है। उद्यमशीलता के प्रयासों के अलावा आप परोपकारी कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में और खेल के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य किए हैं। आपकी मेहनत का परिणाम था कि आपको बीएसई सीआईओ क्लब सीईओ ऑफ द ईयर 2015 का सम्मान दिया गया। डेटाक्वेस्ट बिजनेस टेक्नोलॉजी अवार्ड 2015 से सम्मानित किया गया। सीआईओ 100 पुरस्कार 2007, 2012 और 2014 में दिया गया। इंडियन एक्सप्रेस इंटेलिजेंट इंटरप्राइजेज 2011 में पुरस्कार दिया गया। आपने आउटडोर खेल प्रबंधन और दर्शन पर किताबें लिखी हैं और भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत का शौक भी रखते हैं। आपके नेतृत्व में शीला फोम कंपनी ने तेजी से देशव्यापी विस्तार किया। 1993 में बिस्तर और फर्नीचर के लिए स्लिपवेल ब्रांड लॉन्च किया। 1999 में यह वैश्विक ब्रांड बन गया। दो अंतरराष्ट्रीय इकाइयों यूएसए और यूके के साथ जुड़ गया। कंपनी आपके नेतृत्व में ऊंचाइयों को छूती रही और देश में फॉर्म निर्माण में एक शीर्ष कंपनी के रूप में उभरी।

श्री अशोक अग्रवाल

श्री अशोक अग्रवाल जी ग्लोब कैपिटल मार्केट लिमिटेड के अध्यक्ष और सह संस्थापक हैं। पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट

एवं वित्तीय विश्लेषक हैं। आपने 1982 में सीए की पढ़ाई पूरी की और अपने मित्र के साथ मिलकर सीएम फर्म आरंभ किया। अपनी मजबूत सोच पर निर्णय लिया और निर्णय पर अटल विश्वास करके श्री अग्रवाल जी आगे बढ़ते गए। आपने 1992 में ग्लोब कैपिटल मार्केट लिमिटेड कंपनी शुरू की जो शेयर बाजार में निवेशकों के बीच अच्छी प्रतिष्ठा रखती है। आपको 1993 में राष्ट्रीय नागरिकता पुरस्कार पूंजी बाजार के विकास में सर्वोत्तम योगदान के लिए मदर टेरेसा जी के द्वारा दिया गया। आप दिल्ली स्टॉक एक्सचेंज एसोसिएशन के 34 साल की कम उम्र में चेयरमैन चुने गए और स्टॉक एक्सचेंज एसोसिएशन के 3 बार चेयरमैन रहे।

श्री दीपक गर्ग

श्री दीपक गर्ग का जूतों का कारोबार है। इसके साथ ही समाज सेवा में लगे रहते हैं। इनकी इच्छा है कि समाज के सभी लोग स्वावलंबी बनें। इसलिए उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य हर जरूरतमंद की सेवा करना बना लिया है। वे लोगों को उस योग्य बना देना चाहते हैं, जहां से वे स्वयं अपने काम कर सकें। ■

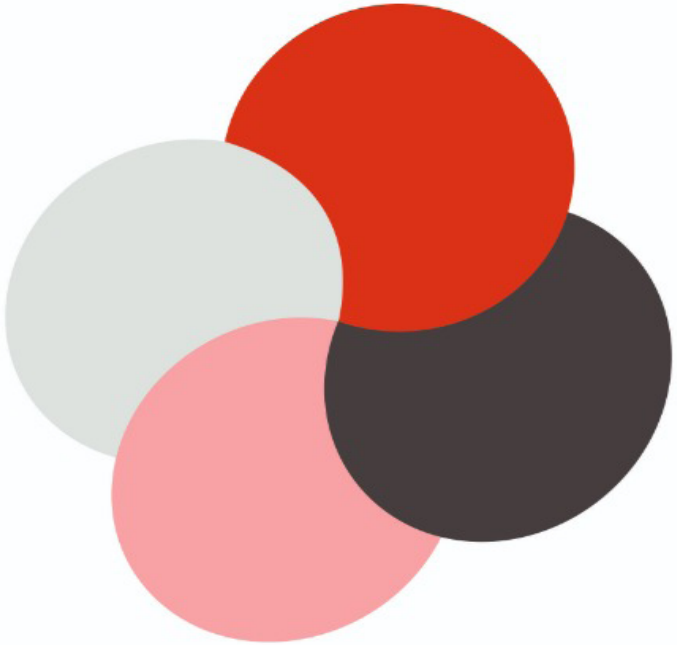

Maashitla™

Creating Successful People

समाज के कुछ दानवीर

✍ प्रतिनिधि

डॉ. रूपिन्दर सिंह सोढ़ी

गुजरात कॉपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लि. (अमूल) के प्रबंध निदेशक हैं डॉ. रूपिन्दर सिंह सोढ़ी। ये डेयरी उद्योग में डॉ. आर.एस. सोढ़ी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके नेतृत्व में अमूल का आज सालाना कारोबार 61,000 करोड़ रु. है। अमूल से लाखों पशुपालक जुड़े हैं। ये लोग ही अमूल को दूध उपलब्ध कराते हैं और इसके बाद अमूल के अनेक उत्पाद तैयार होते हैं। अमूल से 18,600 गांव जुड़े हैं। अमूल में प्रतिदिन 30 लाख लीटर दूध आता है।

नरेश मित्तल

समाजसेवी नरेश मित्तल अनेक संगठनों से जुड़े हैं। ये श्री जाटखोर गौधाम, भरतपुर खामा के ट्रस्टी, श्रीकृष्ण गौशाला, दिल्ली के कार्यकारी सदस्य, नियमित दानदाता अपना घर आश्रम, भरतपुर एवं संस्थापक, अपना घर आश्रम, दिल्ली के सदस्य, कार्यकारी सदस्य, तीसरा विकास ट्रस्ट, गोवध 'न, मथुरा, कार्यकारी सदस्य, सालासर धाम, ट्रस्टी, महाराजा अग्रसेन अस्पताल, दिल्ली, संरक्षक ट्रस्टी, महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल हॉस्पिटल (दिल्ली), कार्यकारी सदस्य, हरियाणा मैत्री संघ, भिवानी परिवार मैत्री संघ के संरक्षक जैसे पदों का दायित्व संभाल रहे हैं।

श्री मुकेश गर्ग

श्री मुकेश गर्ग (पुत्र स्वर्गीय श्री प्रेम चंद गर्ग) उभरते हुए उद्योगपति हैं। इन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक से कृषि उत्पादों के अपने पारंपरिक व्यवसाय से की थी और अब वे अपने पारिवारिक व्यवसाय को नई ऊंचाइयों पर ले गए हैं। इसके साथ ही वे सेवा कार्यों में तन, मन, धन से सहयोग करते हैं।

श्री मुकेश अग्रवाल

समाजसेवी श्री मुकेश अग्रवाल कई प्रकार से समाज की सेवा कर रहे हैं। इन्होंने विवेकानंद आरोग्य केंद्र, सूरज प्रकाश आरोग्य केंद्र, फरीदाबाद में डायलिसिस केंद्र खोले हैं। कोविड के समय में दिन-रात लोगों का साथ दिया और गंभीर रोगियों के लिए 500 से अधिक यूनिट प्लाज्मा की व्यवस्था की। संघेल गौशाला, एनयूएच, हरियाणा में लगभग 30,000 वर्ग फुट का चारा घर दान किया। विभिन्न गौशालाओं में नियमित रूप से 5,000 गायों को भोजन कराना। राजस्थान राज्य में चेक डैम के निर्माण का समर्थन और पहले ही 50 से अधिक ऐसे बांध बना चुके हैं। इस तरह की अनेक सेवा कर रहे हैं।

श्री मनोज कुमार गुप्ता

श्री मनोज कुमार गुप्ता प्रसिद्ध उद्योगपति हैं। बवाना औद्योगिक क्षेत्र दिल्ली में एलईडी लाइट का निर्माण कार्य करते हैं। इसके साथ ही योग प्रशिक्षक, प्रेरक, भजन गायक, पार्षद भी हैं। 2009 से आर्ट ऑफ लिविंग फैक्ल्टी और तब से सुदर्शन क्रिया, प्रेरक कक्षाएं और योग के लिए कार्यशाला आयोजित कर रहे हैं। हजारों प्रतिभागियों को योग और ध्यान सिखाया है और दिल्ली को स्वच्छ रखें आदि जैसी सामाजिक परियोजना का आयोजन किया है। यूट्यूब पर इनके भजन हैं। इन्होंने समाज सेवा कार्य के लिए सेवा भारती का बधाई दी है।

श्री त्रिलोकी नाथ गोयल

श्री त्रिलोकी नाथ गोयल मियांवाली नगर, नई दिल्ली में रहते हैं। कारोबार करने के साथ ही अनेक संगठनों से जुड़कर समाज के लिए कार्य कर रहे हैं। ये महाराज अग्रसेन अस्पताल पंजाबी बाग, महाराजा अग्रसेन इन्टरनेशनल हॉस्पिटल रोहिणी, सैक्टर-22, महाराजा अग्रसेन शिक्षा ट्रस्ट नांगलोई, गोशाला, धर्मशाला और स्कूल, नांगलोई

फिजियोथैरेपी सेन्टर आदि में सेवा कार्य करते हैं। इन्होंने भी सेवा भारती को अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

श्री मुकुल अग्रवाल

श्री मुकुल अग्रवाल माशितला सिक्योरिटीज प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं। चार्टर्ड एकाउंटेंट, कंपनी सचिव और कानून की पढ़ाई की है। कई वर्षों से कंपनी का नेतृत्व कर रहे हैं और उद्योग जगत में बहुत प्रसिद्ध हैं।

श्री परवीन जिन्दल

श्री परवीन जिन्दल का जूते बनाने का व्यवसाय है। इसके साथ ही अनेक सामाजिक और धार्मिक संगठनों से जुड़े हैं। जैसे- भोजन सेवा समिति, शिव शक्ति सनातन धर्म मंदिर, अग्रसेन सोसायटी आदि। उद्देश्य है सेवा में अपनी सनातन संस्कृति को बचाना या अपना हर अगला कदम देश की सेवा में समर्पित करना। इन्होंने सेवा भारती परिवार को समाजोत्थान कार्य की ढेर सारी बधाइयां दी हैं।

श्री वीरेश जुल्का

ग्लो स्टार कम्पनी के संचालक वीरेश जुल्का सामाजिक सेवा कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। इन्होंने अभावग्रस्त परिवारों के लिए सेवा भारती द्वारा किये जा रहे कार्यों का अभिनंदन किया है और सेवा भारती को शुभकामनाएं दी हैं।

श्री सुभाष अग्रवाल

श्री सुभाष अग्रवाल कारोबार के साथ-साथ अनेक सामाजिक और धार्मिक कार्यों से जुड़े हैं। ये महाराजा अग्रसेन अस्पताल, पंजाबी बाग और रोहिणी के साथ कार्यकारी सदस्य हैं। ये जनसेवा फाउंडेशन में उपाध्यक्ष, एकल अभियान में सदस्य, ट्रस्टी, श्री कृष्ण गौशाला, वृंदावन और दिल्ली। इसके साथ ही गौशाला, सावदा, दिल्ली, श्री गोपाल गौसदन, हरेवली, गौशाला, पथमेड़ा, राजस्थान और समस्त हनुमान भगत गौशाला, जातिकला, दिल्ली के ट्रस्टी हैं। ■

सेवा-विभूतियों को प्रणाम

मानव जीवन कर्मों के अधीन है और जो कर्म मानव समाज के कल्याण के लिए किए जाएं वे अति उत्तम हैं। सेवा भारती एक ऐसी ही संस्था है, जो सदैव ही सेवा कार्यों के लिए कटिबद्ध है। समाज के प्रत्येग वर्ग का संरक्षण, स्वावलंबन हमारा ध्येय है। और ऐसा केवल सेवा का भाव रखने वाले सेवकों, दान का भाव रखने वाले दानवीरों के सहयोग से ही संभव है।

'सेवा सम्मान कार्यक्रम-2022' समाज के लिए एक नया प्रेरणा का स्रोत है। अतुलनीय सेवा के लिए सभी सम्मानित सेवा-विभूतियों को कोटि-कोटि प्रणाम व शुभकामनाएं। प्रभु से प्रार्थना है कि हमारा सेवा का भाव सदैव ऐसा ही बना रहे।

-विजेन्द्र कुमार

बड़े लोगों की बड़ी सेवा

✍ दीप्ति अग्रवाल

आज समाज में ऐसे बहुत सारे उद्योगपति और पैसे वाले हैं, जो अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा समाज कार्य में लगाते हैं। ये लोग शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराकर देश की बड़ी सेवा कर रहे हैं। यहां कुछ ऐसे ही लोगों की जानकारी दी जा रही है-

महेश सावनी

महेश जी हर वर्ष करीब 200 गरीब अनाथ कन्याओं का विवाह करवाते हैं। ये गुजरात के सूरत में रहते हैं। इनका हीरे का व्यवसाय है। ये सभी कन्याओं के पिता बन, कई तरह के उपहार, कपड़े, फर्नीचर और जो सामान एक कन्या के विवाह हेतु लगता है, ये सभी जरूरत का सामान उन निर्धन कन्याओं को देते हैं। इस वर्ष इन्होंने करीब 300 अनाथ कन्याओं का विवाह कराया है।

सावजी ढोलकिया

सावजी ढोलकिया हरे कृष्णा डायमंड के मालिक हैं। ये हर वर्ष दिवाली के समय अपने कर्मचारियों को उपहार देने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके उपहारों में घर, गाड़ी और महंगे गहने शामिल हैं। उनका मानना है कि ऐसे उपहार देने से उनके कर्मचारियों में एक ऊर्जा उत्पन्न होती है, उनका मनोबल बढ़ता है और आगे आने वाले सालों में उनकी कार्य-प्रणाली में बहुत ही बदलाव आ जाता है। वे पूरे वर्ष अपनी पूर्ण लगन से कार्य करते हैं। इसका दूरगामी प्रभाव पड़ता है। समाज में एक नई किरण का बीजारोपण होता है।

श्री विनोद जैन

ये भारत के मशहूर उद्योगपति श्रीमान मुकेश अंबानी के दाएं हाथ माने जाते थे। रिलायंस पेट्रोकेमिकल के 22 निदेशकों में से एक थे। करोड़ों का वेतन पाने वाले विनोद जैन जी ने 25 अप्रैल, 2021 को महावीर स्वामी जी के जन्मदिवस पर जैन ईश्वरी दीक्षा ले ली। साथ ही उन्होंने अपनी सारी संपत्ति दान में दे दी। इतनी बड़ी संपत्ति का मोह त्याग कर उन्होंने मुंबई के बोरीवली में दीक्षा ली। 2012 से 9 साल से वे रिलायंस में कार्यरत थे। दीक्षा लेने के एक माह पहले ही इन्होंने एक कोर्स किया था, जिससे कि अपने व्यवसाय में उत्पादन कैसे बढ़ाया जाए इसका अध्ययन किया। किंतु सब छोड़कर धर्म की राह पर चल पड़े। उनका मानना है कि ऊपर जाने के लिए पुण्य की पोटली की जरूरत होगी न कि धन की। हमारे साथ हमारे कर्म ही जाएंगे। उनके अनुसार दीक्षा लेने पर अपना कल्याण तो करेंगे, दूसरों का भी करेंगे।

किरण मजूमदार

भारत में ये दूसरी महिला हैं, जिन्होंने दान देने का निश्चय किया, बिल गेट्स और वॉरेन बफेट के प्रयासों से जुड़ कर। बता दें कि ये लोग विश्व के उद्योगपतियों से निवेदन करते हैं कि वे अपनी आय की कम से कम आधी आय को दान दे दें। उनका यह प्रयास स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करता है। किरण जी कैंसर जैसी भयानक बीमारी से ग्रसित लोगों की सहायता करती हैं। उन्होंने कैंसर जांच हेतु डायग्नोस्टिक केंद्र बनवाए हैं, ताकि इस बीमारी का जल्दी से जल्दी पता चल सके। वे यह कार्य अपनी निजी आय का इस्तेमाल कर करती हैं।

सुनील भारती मित्तल

एक साधारण परिवार में जन्मे सुनील जी आज विश्व के सबसे अमीर व्यक्तियों की सूची में शामिल हैं। ये उन उद्योगपतियों में से एक हैं, जो कि मानते हैं अपने देश के बच्चों के भविष्य को सुधारा जाए। ये विश्व की सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी को चलाते हैं। उन्होंने अपनी कुल संपत्ति का दसवां भाग समाज सेवा में लगाने का निर्णय लिया है। यह भाग अपनी कंपनी का न होकर, उनकी निजी आय का ही होगा। वह दान देने के साथ-साथ हाथ पकड़ने का विचार रखते हैं। ये अपने देश के युवाओं को लिए निशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराते हैं। शिक्षा का दान ही जीवन में सर्वोत्तम दान है। जिससे न केवल वह एक जीव, किंतु उनका सारा परिवार उन्नति करता है। ■

प्रिय श्री अग्रवाल!
आशा है आप सकुशल होंगे। आपके निमंत्रण से मैं काफी गौरवान्वित हूँ और सेवा भारती को धन्यवाद देती हूँ।
इस कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

- रोशनी नडार
चेयरपर्सन, शिव नडार फाउंडेशन और 'द हेबीटेट ट्रस्ट'

क्या है सीएसआर कानून!

✍ भूपेन्द्र

भारत एकमात्र ऐसा देश है, जहां सीएसआर (कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी) एक अनिवार्य कानून है। तो भारत सरकार ने सीएसआर कानून क्यों बनाया और यह कानून कैसे लागू हुआ? अर्थव्यवस्था के विकास में परिवर्तन के साथ, भारत में सीएसआर का विकास प्रारंभिक औद्योगीकरण की अवधि के दौरान 1850 से पहले विभिन्न चरणों से गुजरा है। धनी व्यवसायी की अधिकांश सामाजिक गतिविधियां 1850 के बाद जनता के लिए मंदिरों और उद्यानों के निर्माण पर केन्द्रित थीं। फिर चीजें बदलने लगीं। 1850 के बाद भारत में सीएसआर की जड़ें महात्मा गांधी से जुड़ा एक आत्मनिर्भर निर्माण का सपना है। इसको अधिक बल 1951 में उनके दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद मिला। देश में एक बड़ी वित्ती असमानता थी। उनका मानना था कि लोगों के एक समूह के साथ धन का सकेन्द्रण समाज के कल्याण के लिए अच्छा नहीं है ।

भारत के लोगों ने स्वतंत्रता के लिए एकजुट होना शुरू कर दिया गांधी जी ट्रस्टीशिप की अवधारणा लेकर आए, जिसका अर्थ है कि उद्योगपति को समाज के कल्याण में निवेश करना चाहिए। विचार समाज के समृद्ध वर्गों पर दबाव डालना और राष्ट्र के सामाजिक आर्थिक विकास में मदद करना था। इस ट्रस्टीशिप मॉडल के अच्छे परिणाम होने लगे, क्योंकि कई उद्योग द्वारा स्थापित किए जा रहे विद्यालयों के साथ-साथ प्रशिक्षण और वैज्ञानिक संस्थानों के विकास के लिए थे।

अंग्रेजी शासन के बाद, सीएसआर एक परोपकार का बड़ा माध्यम बना टाटा, गोदरेज, बजाज और बिरला जैसे कुछ बड़े उद्योग परिवारों द्वारा अपनाई गई सेवा में लिया परोपकार गतिविधि और साथ ही ये गतिविधियां पूरी तरह से निस्वार्थ नहीं थीं, क्योंकि इसका उदेश्य 1960 से 1980 के बीच भारत की स्वतंत्रता के बाद समाज में ब्रांड की छवि को सुधारना था। पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र पर कई पीएसयू की स्थापना इस समय के आसपास सामाजिक मॉडल के आधार पर की गई थी कि सार्वजनिक क्षेत्र विकास का चालक था और 1980 के बाद वैश्वीकरण के प्रयास किए गए और धीरे-धीरे कंपनी ने कई हितधारकों से व्यावसायिक रणनीति का विश्लेषण करना शुरू कर दिया। 1991 में व्यापार सुधारों के उदारीकरण के साथ निर्यात और आयात व्यवसायों में शामिल कंपनियों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करना होगा और वैश्विक स्तर के रूप में नए मानदंडों का पालन करना होगा।

यह वह समय था कि स्थिरता शब्द न आधुनिक उद्योगों और कॉरपोरेट कंपनियों की किताओं में प्रवेश किया। जब समाज की भलाई के लिए व्यवसायी इतना प्रयास कर ही रहे थे तो इसे कानूनी रूप देने की आवश्यकता क्यूं पड़ी, इसे कम क्यों होना पड़ा, आइए इसकी गहराई में उतरें। ऐसे कई मामले थे जहां भारत सरकार द्वारा ऐसी घटनाओं की एक श्रृंखला के बाद सामाजिक योगदान से लाभ प्राप्त करने के लिए एक व्यवसाय झूठे खुलासे को पूरा करता है। निजी क्षेत्र अपनी सामाजिक जिम्मेदारी की उपेक्षा कर रहा था। इसे ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने सीएसआर को एक कानून बनाने का फैसला किया, जिसमें कहा गया था कि सभी संगठनों को औसतन शुद्ध लाभ का कम से कम दो प्रतिशत खर्च करना होगा। यह कानून 1 अप्रैल, 2014 से लागू हुआ और भारत में निगमित सभी कंपनियों और निम्नलिखित वार्षिक वित्तीय आंकड़ों पर लागू होता है। जिनके पास 500 करोड़ रुपये या उससे अधिक का नेटवर्थ है जिसका टर्नओवर 1000 करोड़ रु. या उससे अधिक है, उन्हें एसटीजी के तहत गतिविधियों और क्षेत्रों की सूची में 5 प्रतिशत या उससे अधिक का शुद्ध लाभ है और सीएसआर कानून पर स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है यदि कोई कंपनी कानून का उल्लंघन करती है तो तय जुर्माना या कारावास के साथ दंडनीय अपराध है। यह भी स्पष्ट रूप उल्लेख किया गया है कि इस कानून के तहत आपके दान या उपहार को सीएसआर में कवर नहीं किया जाएगा। भारत में कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय के अनुसर 2014 से 18 के बीच कुल सीएसआर फंड खर्च 52200 रु. को पार कर गया है।

शिक्षा एक आयाम है। देश के आर्थिक विकास के लिए तत्पर इस क्षेत्र को इन पांच वर्षों में 37 प्रतिशत की सबसे बड़ी सीएसआर हिस्सेदारी प्राप्त हुई। ■

abbzorb®

CONTINENTAL Milkose (India) Ltd.
we manufacture, you sell...

PROTEIN खाएं, वजन घटाएं

UP TO 45% OFF

THAKNA SIKHA NAHI

FOR MEN | WOMEN

PROTRITION PRODUCTS LLP

REGD. OFF : K-185/2, 1ST FLOOR, SURYA PLAZA BUILDING, NEW FRIENDS COLONY, NEW DELHI - 110 025 (INDIA)
Cont.: +91 9717709229 | Email: care@abbzorb.com | Web: www.abzorb.com

भारत में सीएसआर और सामाजिक उत्तरदायित्व

✍ डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

राष्ट्र और समाज के प्रति मनुष्य के कर्तव्य की चर्चा समय-समय पर हमारे आस-पास होती रहती है। जिन लोगों ने अपने व्यक्तिगत उन्नति से अधिक महत्व सामाजिक उन्नति को दिया, उनके प्रति समाज लंबे समय तक कृतज्ञता प्रकट करता है। एक साधारण मनुष्य की तरह एक संस्था या व्यवसायिक उपक्रम का भी समाज के प्रति गहरी जिम्मेदारी होती है। लंबे समय के सांस्कृतिक संघर्ष और उपनिवेशिक अवस्था के कारण भारत का समाज अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन हो गया।

प्राचीन भारत के व्यवसायिक परिवारों के कार्यों पर नजर डालें तो ज्ञात होगा कि गुरुकुल, गौशाला, चिकत्सालय, मंदिर, कुआं, नहर, आदि जैसे उपक्रम के स्थापना में व्यवसायिक परिवार प्रमुख रूप से होते थे। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर) की भावना का स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। भारत में समाज के प्रति, जानवरों और वंचित वर्गों के लिए व्यवसायों और नागरिकों की ज़िम्मेदारी की अवधारणा को बढ़ावा देने में धर्म ने भी एक प्रमुख भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत के कुछ व्यवसायिक परिवार ने अपने व्यापार के साथ-साथ अपने सामाजिक कार्यों के लिए भी पहचान बनाई है। प्रधानमंत्री द्वारा 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने में सीएसआर एक प्रमुख भूमिका का निर्वहन कर सकता है।

कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर) और व्यापार जगत

समस्त प्रकार की आर्थिक एवं व्यवसायिक गतिविधियां समाज में जन्म लेती हैं और समाज में पूर्ण होती है। स्वालंबी समाज में आर्थिक गतिविधियां सुरक्षित और विकासोन्मुखी रहे इसलिए व्यापार जगत को समय समय पर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करते रहना चाहिए। केवल राज्य को समाज कल्याण की इकाई मान लेने से विकास असंतुलन का स्थान बना रहता है। व्यवस्थित और विकासोन्मुखी समाज के निर्माण के लिए सीएसआर का प्रभाव निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

1. **समाज में स्थिरता:** सीएसआर के विकासात्मक कार्य से समाज में स्थिरता आती है। स्थिर समाज में आर्थिक गतिविधियां उत्पादन, मांग और पूर्ति सुचारू रूप से चलती रहती हैं। अस्थिर समाज में तोड़फोड़, हिंसा, बंद और कर्फ्यू जैसी घटनाएं होती रहती हैं, जिससे व्यापार जगत प्रभावित होता रहता है। व्यापार की कड़ी, मांग और पूर्ति का सामान्य नियम प्रभावित होता हैं।
2. **सबल समाज:** सीएसआर द्वारा अर्थ जगत, समाज को सबल बनाता है। सबल समाज में निर्बल समाज की अपेक्षा क्रय शक्ति अधिक होती है। जब समाज में क्रय शक्ति की क्षमता अधिक होगी तब व्यापार में मांग बढेगा,मांग बढ़ने पर अर्थव्यवस्था को गति मिलेगा। व्यापार बढ़ने से व्यापार जगत मजबूत होता है। स्थिर समाज में व्यापारी वर्ग व्यापार के नए उपक्रमों का विकास करता है।
3. **अच्छे मानव श्रम का विकास:** व्यापार जगत में पूंजी क्र साथ-साथ कुशल मानव श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कुशल और योग्य मानव, समाज में तैयार होते हैं। कुछ व्यवसायिक समूह सीएसआर द्वारा कुशल मानव तैयार करने के उपक्रम करते हैं जो भारत जैसे विशाल देश के लिए कम हैं। टीम वर्क के साथ काम करना, उत्पादन इकाई में सकारात्मक वातावरण के निर्माण और संस्था के प्रति समर्पण और स्वयं को व्यवस्थित रखने आदि जैसे गुणों के विकास के लिए सीएसआर की आवश्यकता है।
4. **व्यापार जगत में सामान्य नागरिक की आस्था बढ़ेगी:** प्रभावी सीएसआर से समाज के निचले तबके को लाभ मिलता है। समाज जब व्यापारिक जगत से सीधे लाभान्वित होता है तो उसमें उसकी आस्था बढ़ती है। असन्तुष्ट नागरिक सरकारी और गैरसरकारी संपतियों को समय-समय पर नुकसान पहुंचाते हैं जिससे सार्वजानिक सम्पतियों की काफी आर्थिक क्षति होती है। सीएसआर से नागरिकों में व्यापार जगत के प्रति विश्वास बढ़ने से इस प्रकार की घटनाओं में कमी आएगी। एक नागरिक और व्यापार जगत एक दूसरे का पूरक होता है जब दोनों एक दूसरे के पूरक हैं तब दोनों को एक दूसरे के हित के लिए कार्य करना चाहिए।
5. **औद्योगिक इकाई में सकारात्मकता:** औद्योगिक इकाई का प्रबन्धन समूह जब सीएसआर के कार्यों में सम्मिलित होता है तब औद्योगिक इकाई में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है। कर्मचारियों का प्रबंधन में आस्था और विश्वास बढ़ता है।
6. **समाज के प्रति उत्तरदायित्व की पूर्ति:** वर्तमान समाज ने कई सामान्य नागरिकों को प्रसिद्द व्यापारी बनने का अवसर

दिया है। इस तथ्य के अनेक उदाहरण हैं। सूक्ष्मावलोकन करने से ज्ञात होता है ऐसे अनेक परिवार हैं जिन्होंने सीएसआर नियम आने से पूर्व समाज का ऋण मान कर समाज के लिए सेवा कार्य प्रारंभ रखा।

7. **सबल और सक्षम राष्ट्रः** भारत को सबल और सक्षम राष्ट्र बनाने के लिए हमें अपने उत्तर दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। भारत के मानव शक्ति, प्रशासनिक व्यवस्था, बैंकिंग व्यवस्था, सुरक्षित वातावरण, शोध और विकास आदि के क्षेत्र में कार्य करने आवश्यकता है। इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति सीएसआर के द्वारा भारत आसानी से कर सकता है।

बढ़े लक्ष्य की प्राप्ति किसी एक व्यक्ति या एक संस्था के प्रयास से नहीं हो सकता। सामूहिक प्रयास से भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति बिना व्यापार जगत के सहयोग के बिना असम्भव है। आज़ादी के 75 वें वर्ष में आज भी कई गाँव स्वास्थ्य, शिक्षा, शुद्ध जल, बिजली आदि जैसे मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित है। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहाँ सीएसआर के द्वारा मूलभूत सुविधाएँ पहुंची हैं। सीएसआर व्यापार जगत को सामाजिक उत्तर दायित्व के लिए अवसर देता है। ■

(लेखक विशिष्ट आपदा शोध केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।)

समाज सेवा से जुड़ीं कुछ महिलाएं

✍ **ऋषिता अग्रवाल**

आज महिलाएं सामाजिक प्रभाव के लिए स्वामित्व या धन के उपयोग में बढ़ी भूमिका निभा रही हैं। भारत में कई प्रमुख व्यावसायिक नींव महिलाओं के नेतृत्व में हैं। या तो उन्होंने स्वयं नींव रखने के लिए धन का सृजन किया है, या अपने परिवार या कंपनियों की परोपकारी पूंजी को तैनात करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

जब कोरोना महामारी आई, तो कई परिवार और श्रमिक अपने घरों से बेघर हो गए। लेकिन साथ ही कई परोपकारी और गैर-सरकारी संगठन संकट में पड़े लोगों की मदद करने के लिए आगे आए। इनमें महिला परोपकारी महिलाएँ थीं जिन्होंने न केवल उदार मनसे दान दिया, बल्कि महामारी के दौरान राहत परियोजनाओं का नेतृत्व भी किया।

परोपकार के मामले में श्रीमती नीता अंबानी कोई अजनबी नहीं हैं। रिलायंस फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष ने समाज में सकारात्मक सामाजिक प्रभाव विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। फाउंडेशन के प्रयास मुख्य रूप से ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास के लिए खेल, आपदा प्रतिक्रिया, कला, संस्कृति और विरासत और शहरी नवीनीकरण पर लक्षित हैं। महामारी के दौरान, नीता एकमात्र भारतीय थीं, जिन्हें टाउन एंड कंट्री पत्रिका की 2020 की सूची में शीर्ष वैश्विक परोपकारी महिला के रूप में स्थान मिला।

ऐसे ही श्रीमती सुधा मूर्ति 1996 से इंफोसिस फाउंडेशन का नेतृत्व कर रही हैं। उन्होंने शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य सेवा, सार्वजनिक स्वच्छता, शिक्षा और कला और संस्कृति के माध्यम से वंचितों को सशक्त बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। भले ही उन्होंने 2021 में इंफोसिस फाउंडेशन के अध्यक्ष के रूप में पद छोड़ दिया, लेकिन उन्होंने अपने परोपकारी प्रयासों को जारी रखा।

उनके बाद लीना गांधी तिवारी और अनु आगा क्रमशः 240 और 200 मिलियन रु. के साथ थीं। लीना तिवारी वंचित महिलाओं के लिए डॉ सुशीला गांधी केंद्र का समर्थन करती रही हैं और ऐसे मानवीय कार्यों में शामिल हैं। केंद्र शैक्षणिक निर्देश, नृत्य और कंप्यूटर के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा और शिक्षा का समर्थन करता है। अन्नू आगा सामाजिक कारणों पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं और थर्मैक्स फाउंडेशन के साथ निकटता से जुड़ी हुई हैं। उनकी रुचि का क्षेत्र शिक्षा है और वे आकांक्षा नामक एक गैर-सरकारी संगठन से जुड़ी हैं, जो मुंबई और पुणे में वंचित बच्चों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देता है।

श्रीमती कविता सिंघानिया भी एक परोपकारी महिला हैं। वे जेके सीमेंट्स की एमडी और सीईओ हैं और एक्सप्रेस एवेन्यू इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड की प्रबंध निदेशक हैं। कविता सिंघानिया भी ग्रामीण विकास के लिए 5 करोड़ रु. देकर 7वीं रैंक पर 2020 की शीर्ष 7 महिला परोपकारी सूची में शामिल हैं।

अन्य उल्लेखनीय महिला परोपकारियों में किरण मजूमदार-शॉ, जिन्होने बायोकॉन, बायोकॉन फाउंडेशन में एक कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी विंग शुरू की। राजश्री बिड़ला भी शामिल हैं, जो आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट की प्रेरक शक्ति हैं। रोशनी नादर, जो दो शैक्षिक फाउंडेशनों की प्रमुख हैं- शिव नादर फाउंडेशन और विद्याज्ञान।

भारतीय महिला परोपकारी इस बात का एक आदर्श उदाहरण हैं कि कैसे सशक्त महिलाएं सामाजिक उत्थान और वंचित वर्ग को आगे बढ़ा सकती रही हैं। ■

ओएनजीसी के सेवा कार्य

✍ **प्रतिनिधि**

देश के लिए आठ में सात तेल के स्रोत खोजने वाले ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) को महारत का तमगा ऐसे ही नहीं मिला है। एक तरफ जहां उसने भारत को तेल और गैस के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए एक के बाद एक तेल कुंओं की खोज कर क्रूड ऑयल उत्सर्जन में कीर्तिमान स्थापित किए हैं, तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन में भी वह अग्रणी भूमिका में रहा है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक समाज के पिछड़े और वंचित लोगों की मदद ओएनजीसी दशकों से बिना किसी शोर-शराबे और प्रचार के करता रहा है।

हजारों बच्चों को बांटे गए हैं फोल्डिंग डेस्क - टीम गांव-गांव, शहर-शहर जाकर लोगों की वास्तविक जरूरत का पता लगाती है और उसी हिसाब से उनकी मदद के लिए ब्लू प्रिंट तैयार करती है। अनेक राज्यों के बहुत सारे जिलों में स्कूल के छात्र जमीन पर बैठकर पढ़ाई करते हैं जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी में दिक्कत आने लगती है। इस समस्या को देखते हुए फाउण्डेशन ने हजारों की संख्या में फोल्डिंग डेस्क किट, जिसे छोटी फोल्ड करने वाली टेबल भी कह सकते हैं, बच्चों में वितरित की। यह विशेष डेस्क आईआईटी कानपुर में पढ़ाई कर लौटे छात्रों द्वारा तैयार की गई है।

हर नाउम्मीद के बीच उम्मीद की किरण लाना है ध्येय- हमारा मुख्य मकसद दूरदराज और समाज के उस पिछड़े और वंचित लोगों तक मदद पहुंचाना है जो विकास की दौड़ में किसी वजह से पीछे छूट गए हैं। इसके अलावा उन प्रतिभाशाली युवाओं को प्रोत्साहित करना भी हमारा कर्तव्य है जिनकी प्रतिभा आर्थिक अभाव के कारण दब गई है। ऐसे लोगों की मदद कर हम उन्हें सशक्त बना कर समाज के लिए उन्हें उपयोगी बना सकते हैं। इससे वे न केवल और उनका परिवार मजबूत बनेगा, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी ऐसी प्रतिभा अपना योगदान दे सकेगी। इसी मकसद से ओएनजीसी फाउण्डेशन प्रतिवर्ष दो हजार प्रतिभाशाली छात्रों को फेलोशिप प्रदान करता है। यह छात्रवृत्ति इंजीनियरिंग, जियो साइंस और मेडिकल जैसे विषयों की पढ़ाई कर रहे छात्रों को प्रदान की जाती है। इस मद में ओएनजीसी प्रतिवर्ष 9.6 करोड़ रु. की धनराशि व्यय करता है।

पायलट प्रोजेक्ट के लिए उत्तर प्रदेश को चुना - अक्सर प्रीमेच्योर पैदा होने वाले 25 प्रतिशत बच्चों में अंधेपन की शिकायत देखने को मिलती है। यदि समय पर इनकी जांच और उपचार कर लिया जाए तो इन नवजात बच्चों की दृष्टि को बचाया जा सकता है। अभी तक इस तरह के टेस्ट या उपचार की सुविधाएं हमारे अस्पतालों में उपलब्ध नहीं हैं। लिहाजा हमने कई दूसरे अस्पतालों और एनजीओ की मदद से इस दिशा में काम शुरू किया है। इसके लिए पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर उत्तर प्रदेश को चुना है।

शिवसागर में बन रहा है अत्याधुनिक अस्पताल ओएनजीसी द्वारा असम के शिवसागर जिले में 350 बेड्स का अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस अस्पताल तैयार किया जा रहा है। इसमें न केवल असम के दूरदराज इलाकों से मरीज आकर अपना नि:शुल्क इलाज करा सकेंगे, बल्कि आस-पस के दूसरे सीमावर्ती राज्यों के लोगों को भी इसका लाभ मिलेगा। हमने इसे एक ग्रामीण परिवेश में बनाने का निर्णय लिया, ताकि लोगों को अपने ही नजदीक इसका लाभ मिलता रहे।

कोविड काल में निभाई बड़ी भूमिका - कोविड-काल में ओएनजीसी फाउण्डेशन ने बढ़-चढ़कर लोगों की मदद की। ऑक्सीजन सिलेंडर की आपूर्ति हो या फिर अच्छे मास्क का वितरण अथवा बेरोजगार और जरूरतमंद लोगों को आर्थिक सहायता देने का सवाल हो या फिर उनको भोजन इत्यादि की जरूरत को पूरा करना इसमें ओएनजीसी फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं ने बड़ी भूमिका निभाई।

आदिवासी बहुल इलाकों में तैयार किए हैं सेल्फ हेल्फ ग्रुप्स- देश की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है बेरोजगारी। इसके निदान के लिए फाउण्डेशन ने अलग -अलग क्षेत्र के विशेषज्ञ छात्रों की मदद से देश के अलग-अलग राज्यों में सेल्फ हेल्प ग्रुप्स तैयार किए हैं, जो न केवल स्थानीय लोगों को हैंडीक्राफ्ट से लेकर अनेक तरह के स्वरोजगार उपलब्ध कराने में मदद करते हैं, बल्कि पैकेजिंग से लेकर उनकी मार्केटिंग तक में हाथ बटाने का कार्य करते हैं। इससे न केवल लोगों का शहरों की तरफ पलायन रुक रहा है, बल्कि इनको प्रशिक्षित करने वाले छात्रों को भी काम मिल रहा है। ■

(यह लेख ओएनजीसी के सीईओ किरन डीएन के साक्षात्कार पर आधारित है। यह साक्षात्कार दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुआ है।)

देहदानी स्व. मांगेराम जी

स्वर्गीय श्री मांगेराम गर्ग जी का जन्म 23 नवंबर, 1936 को हरियाणा के कुराड़ गांव में श्रीमती गुलाब देई एवं श्री जगन्नाथ गर्ग के यहां एक संपन्न परिवार में हुआ। समय ने करवट बदली और परिवार का कारोबार डगमगाने लगा तथा धीरे-धीरे स्थिति खराब होने के कारण मात्र चौदह वर्ष की आयु में उन्हें घर छोड़कर काम की तलाश में देश के अलग अलग हिस्सों में जाना पड़ा।

श्री गर्ग एक कर्तव्यनिष्ठ व्यापारी व कुशल प्रशासक के रूप में एक प्रतिष्ठित समाजसेवी थे। उनकी सेवाभावना के मुख्य स्रोत संत विनोबा भावे व उनके मामाजी श्री प्यारेलाल जी रहे। मामाजी की प्रेरणा से ही मांगेराम जी 1949 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े। मांगेराम जी किशोरावस्था से ही सामाजिक कार्यों में खासी रुचि लेते थे। 1957 के दौरान जब सरकार दाल मिलों पर सख्त होने लगी तब श्री गर्ग ने दाल मिल एसोसिएशन का गठन कर सभी दाल मिलों को संगठित करने का कार्य किया। गोवा मुक्ति आंदोलन के समय मांगेराम जी ने आंदोलनकारियों की काफी सेवा की। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान वे सेक्टर वार्डन बने। 1970 में

आनंद पर्वत पर बनी फैक्ट्रियों से निकलने वाले जहरीले पानी के शुद्धिकरण की कमेटी में वे उपाध्यक्ष का दायित्व संभाल रहे थे। 1987 में निष्काम सेवा ट्रस्ट की नींव रखी। कश्मीर से आए विस्थापितों की भी भरपूर मदद की। आजीवन गोरक्षा आंदोलन एवं गो सेवा समितियों से वे जुड़े रहे। श्री गर्ग धार्मिक कमेटियों से जुड़े रहे और विभिन्न धार्मिक कमेटियों एवं संघों के सफल संचालन का दायित्व निभाया।

देश में आपातकाल के दौरान भाजपा संगठन ने उन्हें जेल गए कार्यकर्ताओं के परिवारों की संभाल का दायित्व सौंपा। वे रूप बदलकर कार्यकर्ताओं के परिवारों से मिलते एवं यथोचित मदद करते। इस दौरान वे दो बार जेल भी गए।

उनकी समाज और संगठन के प्रति निष्ठा और समर्पण भाव को देखकर उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। उनके सफल नेतृत्व की वजह से संगठन में कार्यकुशलता का विस्तार हुआ। अपनी ऊंची सोच और समाजसेवा की भावना को उन्होंने मरणोपरांत अपनी देहदान कर जीवंत रखा। ■

श्री श्याम सुंदर अग्रवाल

श्री श्याम सुंदर अग्रवाल अग्रोहा में बनने वाले कुलदेवी आद्य महालक्ष्मी एवं अष्ठ लक्ष्मीजी मंदिर के ट्रस्टी हैं और उन्होंने माता के आशीर्वाद से इस मंदिर के निर्माण की पूरी जिम्मेदारी को ग्रहण किया है। इसी के साथ आप श्री खाटू श्याम विशाल मंदिर, दिल्ली धाम के राज्य स्तरीय अध्यक्ष भी हैं। श्री अग्रवाल के सामाजिक कार्य- 1.भूमि दान करके एक धर्मार्थ विद्यालय चला रहे हैं जिसका नाम दिल्ली इंग्लिश एकेडमी है। इस विद्यालय का उद्देश्य है कि गरीब और जरूरतमंद बच्चों को विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करना। ये विद्यालय द्वारका सेक्टर 25 में स्थित है। 2. हनुमंत धाम के नाम से सालासर धाम में एक धर्मशाला का निर्माण किया है। 3. राधा कृष्ण और सालासर बाबा के मंदिर एवं धर्मशाला का वृंदावन में निर्माण करवाया। 4. हरिद्वार स्थित संतोषी माता आश्रम में सीताराम अग्रवाल चेरिटेबल अस्पताल बनवाया। 5. ओड़िसा के दुर्गम और गरीब जिले कालाहांडी में मंदिर और अस्पताल का निर्माण। 6. भाउराव देवरस सेवा न्यास, दिल्ली के माध्यम से एम्स, सफदरजंग अस्पताल और राम मनोहर लोहिया अस्पताल के बाहर निशुल्क भोजन वितरण। 7. हरिद्वार स्थित मां संतोषी आश्रम और हनुमंत धाम धर्मशाला सालासर में निशुल्क भोजन वितरण के लिए अन्न क्षेत्र का निर्माण। 8. स्कूल जाने वाले कई छात्रों को स्कालरशिप देते हैं। 9. कई वैश्य संस्थाओं में गरिमामयी जिम्मेदारियां संभाल रहे हैं। 10. गाजियाबाद में आधुनिक सुविधाओं के साथ एक ओल्ड एज होम का निर्माण। ■

R.S BOX

(MANUFACTURING OF CORRUGATED BOXES)

J-4, 129 & 144, Sector-3,DSIDC Industrial Area, Bawana, New Delhi-110039

rsbox4@gmail.com

011-27762018,
+91-9999560582

V2V SPORTS
VIJENDER PLASTICS

(DEALS IN ALL KINDS OF FOOTWEAR)

J-129 & 144,1st Floor, DSIDC Industrial Area, Sector-3, Bawana, Delhi-110039.

9810179560, 9999285898

vijenderplastics4@gmail.com

शुंभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा ।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तु ते ।

SRI VISMA

LED LIGHTS

CE

An ISO 9001:2015 Certified Company

NSIC

MSME

IS 15885 (PART-2/SEC 13):2012 R-41049352

IS 10322 (PART-5/SEC 1):2012 R-41045926

IS 10322 (PART-5/SEC 7):2017 R-41107999

LITWEL INDIA LTD.

Regd. Office Cum Works:
O-36, Sector-3, DSIDC Industrial Area, Bawana, Delhi-110 039
Tel: 9310353178, 27762732, 20876049 • Email: info@litwelindia.co.in
Website: www.litwelindia.co.in

विलायची
Elaichi

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 अक्टूबर, 2022, प्रकाशन तिथि-5 अक्टूबर, 2022
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

CJ Darcl Logistics

LOGISTICS SOLUTIONS
THAT MOVE YOUR WORLD

Multimodal Logistics | Freight Forwarding | Multiple Warehouses | 40+ Years of Experience | Trusted by Top Businesses

Get in touch with us today to learn more about designing logistics that are aligned to your needs.

Email: reachus@cjdarcl.com
Website: www.cjdarcl.com
Toll Free No.: 1800 212 4455

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।